Caring for Land and People...

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Ferro Alloy Producer & Mineral Processors

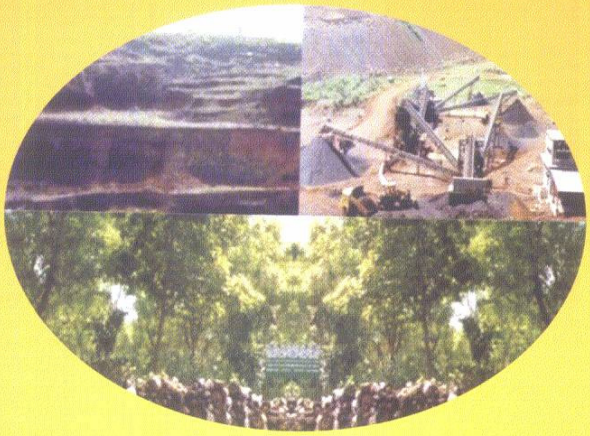

- ***IRON ORE*** *- BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *- BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***
- ***SPONGE IRON*** *LUMPS & FINES*

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com, GRAM: "RUNGTA"

REGISTERED OFFICE

8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA 700017, INDIA
Phone: 033-2281 6580/3751; Fax: 91-33-2281 5380; Email: rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION

RUNGTA OFFICE

MAIN ROAD, BARBIL 758035, DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 275221/277481/ 441; Fax: 91-6767-276161
Email: rungta_bbl@yahoo.co.in, GRAM: "RUNGTA"

SPONGE IRON DIVISION

ORISSA
RUNGTA OFFICE
MAIN ROAD, BARBIL 758035
DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 27689/277391/021
Fax: 91-6767-277011

JHARKHAND
RUNGTA OFFICE
SADAR BAZAR, CHAIBASA - 833201
DIST- SINGHBHUM(W), JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256621/256321
Fax: 91-6582-257521

समाज विकास

◆ मई २०११ ◆ वर्ष ६२ ◆ अंक ५ ◆ एक प्रति - १० रु. ◆ वार्षिक-१०० रु.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
चिट्ठी आई है	४
सम्पादकीय : ममता, मारवाड़ी एवं मार्क्सवादी – ***सीताराम शर्मा***	५-७
अध्यक्षीय : नयी सरकार : उद्योग की अपेक्षाएं – ***हरि प्रसाद कानोड़िया***	९
नई सरकार, नई उम्मीदें (विभिन्न विचार)	११-१३
भ्रष्टाचार से बचना है हमें – ***संतोष सराफ***	१५
समाज और संस्कार – ***भानीराम सुरेका***	१७-१८
श्याम चरित का पाठ.... ***ताऊ शेखावाटी***	१८
संयुक्त परिवार में बदलाव की बयार – ***द्वारका प्रसाद डाबरीवाल***	१९-२०
सम्मेलन का वर्तमान स्वरूप : एक चिंतन – ***पुष्पा चोपड़ा***	२१
List of Committee Members	२२-२३
प्रांतीय समाचार : दृढ़ निश्चय तथा जीवटता की प्रतिमूर्ति रमेश बंग	२४
प्रांतीय समाचार : आन्ध्र प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन का चुनाव सम्पन्न	२५
प्रांतीय समाचार : कानपुर शाखा का नवसंवत्सर मेला	२६-२७
प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का नया कार्यालय	२७
प्रांतीय समाचार : पुस्तक, पाठक एवं पुस्तकालय	२८
सम्यक विचार : भ्रूण हत्या जघन्य पाप है – ***परशुराम तोदी पारस***	२९
गीत : ***डॉ. मोहन तिवारी 'आनंद'***	२९
कविता : जिह्वा – ***धर्मपाल प्रेमराजका प्रेम***	३०
राजारहाट में असहाय वृद्धों व परित्यक्त बच्चों के लिये हुआ ममता का मंदिर का उद्घाटन	३१-३३
भोग एवं भ्रष्टाचार ने देश को विक्षिप्त किया है – ***डॉ. मुरली मनोहर जोशी***	३३
परोपकारी मारवाड़ी समाज..... – ***परमजीत नायडू***	३४

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ◆ १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७००००७
फोन : ०३३-२२६८ ०३१९ ◆ email: samajvikas@gmail.com
के लिये श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा
सी.डी.सी. प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित
प्रेरक संपादक : नंदकिशोर जालान ◆ संपादक : सीताराम शर्मा

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है

"समाज विकास" रै जनवरी अंक में प्रकाषित "हीणै और बोदै पूताँ री मायड़" रै लेखक श्री रामनिरंजन ठिमाउँ जी सै उणारै लेख रै सम्बन्ध में दो शब्द कैणो चाउँ हूँ।

थे थारै ई लेख मै आठवीं सूची मै राजस्थानी ने शामिल करणै से राजस्थान रा टुकड़ा हो ज्याणै रो डर लिख्या हो। दूसरी तरफ शामिल करवाणै रै कम प्रयासाँ सै निराश होकै "हीणै बोदै पूताँ री मायड़" भी लिख रया हो? दोनों विरोधी बाताँ कुछ कम जँची।

मैं ज्यादा जानकार तो कोनी, थारे ई लेख नै पढ़ कै मन्नै लाग्यो कि राजस्थानी "हीणो बोदै नईं" कछुअ री नाईं खूब सोच-समझ कै, दूर की परख कै, आपकी सगली सक्ती नै भेली करकै फूँक फूँक कै, धीर-धीर ई सही, पण "सही डेग चालणै हालै पूताँ री" "भोत भागवंती माँयड़" है, तो राजस्थानी "दूर री थाह राखणिया-समझदार पूताँ री मायड़ है।" वो लेख तो मैं पढ़ी कोनी हूँ, पण इतणो विश्वास जरूर है कि जद थारै स्याँका, कलकत्ते वाले भाईजी स्याँका जगाणिया और जागणिया पूत बैठ्या है तो या माँयड़ कि कै माण है।

मैं राज्य विवाद, आठवीं सूची जैंयाल्की बड्डी बाताँ कोनी जाणूँ। मैं तो बस आपसरी मै, घराँ मै, मंदिरा मै, षादी ब्याहाँ मै, सम्मेलणाँ और मीटिंगाँ मै यानि प्रबुद्ध राजस्थानी मेलाँ मै मारवाड़ी बोलणै री प्रबल समर्थक हूँ।

श्रीमती स्वाति चूड़ीवाल
पूर्व कार्यकारिणी सदस्य
आरा प्रांतीय मारवाड़ी महिला मंच

चिट्ठी आई है

कविता माहेश्वरी ने की पी.एच.डी.

प्रिय महोदय,

परम हर्ष की बात है कि हमारे जोरहाट शाखा के अध्यक्ष श्री बाबूलालजी गगङ की पुत्रवधू श्रीमती कविता माहेश्वरी (धर्मपत्नी श्री सुरेश गगङ) ने गौहाटी युनिवर्सिटी से "पीएचडी" की उपाधि प्राप्त की है। गौहाटी कॉमर्स कॉलेज में प्रवक्ता श्रीमती कविता माहेश्वरी का शोध विषय **ए स्टडी ऑन रेवेन्यू फ्लो फ्रॉम वैट एंड सर्विस टैक्स, प्रोस्पेक्ट्स फ्रॉम जीएसटी** था। उन्होंने अपना शोध कार्य गौहाटी विश्वविद्यालय के वाणिज्य विभाग के प्रोफेसर डॉ. सुजीत सिकंदर के दिशा निर्देशन में किया। श्रीमती माहेश्वरी सरभोग (असम) के श्री हरीकिशन कमला माहेश्वरी की सुपुत्री है।

अनिल केजड़ीवाल
मंत्री, जोरहाट शाखा

श्री शंकर हरलालका को मातृशोक

सांध्य दैनिक "सेवा संसार" के संस्थापक सम्पादक श्री शंकरलाल हरलालका की माताश्री श्रीमती गुलाबी देवी हरलालका का ११ मई २०११ को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गयी हैं।

मारवाड़ी सम्मेलन श्री हरलालकाजी के इस शोक में अपनी सहानुभूति प्रकट करता है एवं ईश्वर से प्रार्थना करता है कि कष्ट की इस घड़ी में परिवार को धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करें।

सम्पादकीय

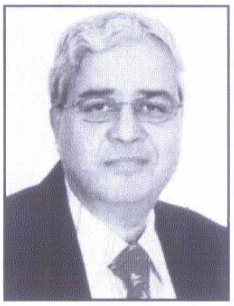

ममता, मारवाड़ी एवं मार्क्सवादी

– सीताराम शर्मा

बात १९७७ की है। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी ने जनता पार्टी एवं कांग्रेस के विरुद्ध त्रिकोणीय मुकाबले में अप्रत्याशित रूप से २३१ सीटों के साथ तीन-चौथाई बहुमत प्राप्त कर बंगाल में वाम मोर्चा सरकार का गठन किया।

बदले माहौल एवं आशंका के वातावरण में कलकत्ता के विभिन्न चेम्बर ऑफ कॉमर्स के वरिष्ठ प्रतिनिधियों ने तत्कालीन मुख्यमंत्री ज्योति बसु से भेंट की। वित्त मंत्री डा.अशोक मित्रा भी उपस्थित थे।

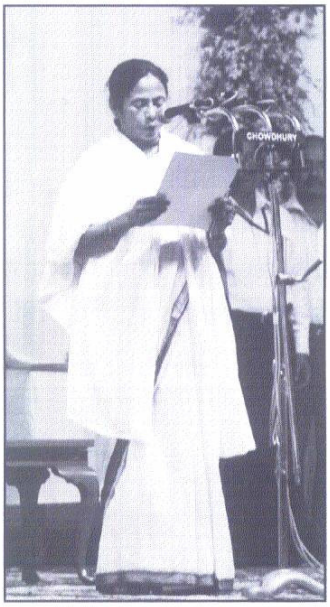

१९६७-६८ की संयुक्त मोर्चा सरकार के घेराव से त्रस्त एवं आतंकित उद्योग प्रतिनिधियों को १९७७ की वाम मोर्चा सरकार ने उपरोक्त बैठक में साफ शब्दों में कहा "यह मजदूरों की सरकार है, हम उनके साथ हैं और रहेंगे। आप उद्योग लगायेंगे एवं मुनाफा करेंगे इसके लिये हमारी सरकार केन्द्र से आपके लिये कोटा-परमिट-लाइसेंस के लिये बिचौलिये का काम नहीं करेगी।" एक प्रत्यक्षदर्शी के अनुसार बैठक इतनी "भयंकर" थी कि ऐसा सन्नाटा छाया जैसे सबको सांप सूंघ गया हो। एक युवा उद्योगपति ने साहस बटोरकर प्रतिवाद करने का प्रयास किया। उपस्थित उद्योगपतियों में प्रायः सभी या अधिकतर मारवाड़ी थे। उद्योगपतियों का मार्क्सवादी शासकों से यह पहला सीधा साक्षात्कार था।

सरकार एवं व्यवसाय का चोली दामन का साथ है। अतः सत्ता परिवर्तन सीधे तौर पर उद्योग-व्यवसाय को प्रभावित करती है। नयी सरकार में स्वाभाविक रूप से एक दूसरे के प्रति आशंका बनी रहती है।

३४ वर्ष पश्चात् २०११ में इतिहास हूबहू दुहराया गया है। प्रायः उतनी ही २२७ सीटों के साथ तीन चौथाई बहुमत प्राप्त कर तृणमूल कांग्रेस गठबंधन ने वाम मोर्चा को पराजित कर एक ऐतिहासिक परिवर्तन किया है। १९७७ में जनता-कांग्रेस विरोधी पक्ष को ६३ सीटें मिली थी, अबकी बार विरोधी वाममोर्चा को प्रायः उतनी ही सीटों से संतोष करना पड़ा है। फर्क इतना कि इस बार यह पूरी तरह अप्रत्याषित नहीं था।

यह एक विडम्बना, किन्तु सत्य है कि अन्य प्रांतों के विपरीत पश्चिम बंगाल में उद्योग-व्यवसाय के क्षेत्र में स्थानीय निवासियों की तुलना में प्रवासी मारवाड़ी समाज का बाहुल्य एवं प्रभुत्व है। उद्योग के क्षेत्र बंगाल में यह एक ऐसा सामाजिक विभेद है जो सरकार एवं व्यवसाय के बीच कहीं न कहीं संवादहीनता एवं एक अनकही दूरी पैदा करता है। विशेषकर इस स्थिति में जब उनके राजनैतिक प्रतिनिधित्व में एक लगातार कमी आ रही हो। पिछले ३४ वर्षों से हिन्दी भाषा-भाषी समाज, जिसमें मारवाड़ी समाज का एक विशिष्ट स्थान है, का बंगाल के मंत्रिमण्डल में कोई प्रतिनिधित्व नहीं रहा है। मारवाड़ी समाज की उद्योग में प्राथमिकता के चलते बंगाल में "उद्योग" एवं "मारवाड़ी" पर्यायवाची बन गये हैं। दोनों को साथ जोड़कर देखना एवं सोचना न सही है और न उचित।

वाममोर्चा के पहले तीन कार्यकालों १९७७ से १९९१ की उपेक्षा के चलते राज्य से उद्योगों में गिरावट आयी एवं पलायन घटा। १९९१ की चौथी वाम मोर्चा सरकार ने जहां उद्योग धन्धे की प्राथमिकता को महत्व देना आरम्भ किया, वहीं उद्योगपतिया

वित्तमंत्री डॉ. अशोक मित्रा शपथ पाठ करते हुए।

एवं व्यवसायियों के साथ इस बीच उनके विश्वास एवं सम्बन्धों में भी उन्नति हुई। लेकिन राजनैतिक सोच अभी भी पूंजी विरोधी थी जो एक महत्वपूर्ण मंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य के ज्योति बसु सरकार की "पूंजीवादी एवं प्रमोटरी नीति" के विरुद्ध त्यागपत्र के रुप में उभरी। २००० में बुद्धदेव भट्टाचार्य के मुख्यमंत्री बनने तक सरकार एवं उद्योगपतियों के बीच "मधुर सम्बन्ध" स्थापित हो गये थे। इससे नाराज पार्टी के अन्दर कट्टरपंथी कम्युनिस्टों ने "कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी" को "कम्युनिस्ट पार्टी मारवाड़ी" कहना शुरू कर दिया जैसा कि वरिष्ठ पत्रकार एवं स्टेट्समेन के पूर्व संपादक सुनन्दा दत्त राय ने अपने विश्लेषण में चर्चा की।

दुर्भाग्यवश बंगाल में उद्योग एवं मारवाड़ी पर्यायवाची बन गये है तथा सभी राजनैतिक दल उद्योगोन्मुख नीतियों को केवल मारवाड़ियों से जोड़कर देखते हैं। देश के सबसे बुद्धिजीवी एवं प्रगतिशील राज्य बंगाल में आज भी पूंजी को उस दृष्टि से नहीं देखा जाता जैसा अन्य विकसित राज्यों में। लक्ष्मी से अधिक सरस्वती वंदनीय है। हालांकि युवा पीढ़ी के विचारों में एक बड़ा परिवर्तन हुआ है। कोकोकोला द्वारा गत वर्ष प्रायोजित एक सर्वे में पाया गया है कि युवा पीढ़ी को आज सबसे बड़ी आकांक्षा धनी बनने की है। बंगाल का युवा भी इसमें शामिल है।

विधान सभा चुनाव के नतीजों का विश्लेषण करते हुए एक टी. वी. चैनल में कांग्रेस के वरिष्ठ संसद सदस्य मणिशंकर अय्यर ने वाममोर्चे की हार के लिये मार्क्सवादियों के "मारवाड़ी एवं पारसी प्रेम" को दोषी ठहराया है। पारसी से निश्चित रूप से उनका संकेत सिंगुर के टाटा प्रकरण से था। वाम मोर्चा सरकार की औद्योगिकरण नीति को मारवाड़ी प्रेम से जोड़कर देखना कहां तक उचित है। लेकिन यह सत्य है कि १९७७ से अब तक गंगा पूल के नीचे से काफी पानी बह चुका है। वाम मोर्चा सरकार की सोच भी इस बीच बहुत बदल चुकी थी एवं उद्योग जगत के साथ एक कार्यकारी सम्बन्ध स्थापित हो गया था।

मंत्री मानस भूईयां शपथ पाठ करते हुए।

प्रत्येक सत्ता परिवर्तन के साथ उद्योग जगत में नयी सरकार की नीति, रवैये एवं व्यवहार के सम्बन्ध में प्रश्न उठने स्वाभाविक है। नया दल, नयी नीति एवं नई नैत्री – उद्योगपति एवं व्यवसायी

शपथ समारोह में सीताराम शर्मा, हरिप्रसाद बुधिया एवं संजय बुधिया।

आशंका एवं आशा के बीच झूल रहे हैं। राज्य दिवालियेपन के कगार पर है, ममता की क्या आर्थिक नीति होगी, सिंगुर के संदर्भ में उद्योग के प्रति क्या रूख होगा, वामपंथी दलों द्वारा ममता का अंधविरोध एवं हिंसा का संशय एक तरफ आशंका पैदा करता है, दूसरी तरफ बदला नहीं बदलाव, तथा विरोध नहीं सहयोग का नारा आशा एवं उम्मीद जगाता है। ममता की सबसे बड़ी ताकत है विपुल जन समर्थन, परिवर्तन की आकांक्षा एवं कामना, जनता की असीमित उम्मीदें तथा केन्द्र सरकार का समर्थन। आवश्यकता है उद्योग जगत के साथ एक लगातार संवाद की, एक दूसरे को समझने एवं विश्वास प्राप्त करने की। यह एक ऐसा अवसर है जिसे राज्य के वृहत्तर हित के लिये दोनों नहीं खोना चाहेंगे।

राज्य की पहली महिला मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, जिनकी प्रशासनिक अनुभव एवं क्षमता अभी परिचित नही है, के सभी आरम्भिक निर्णय राजनैतिक परिपक्वता एवं दूरदर्शिता का परिचय देते हैं। पूर्व मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य एवं वामपंथी नेताओं की शपथ समारोह में उपस्थिति, ममता बनर्जी के शिष्टाचार प्रयास का ही सुफल है। राज्य के विकास में सत्तारूढ़ एवं विरोधी पक्ष के आपसी सहयोग के लिये ममता बनर्जी की यह पहल एक शुभ संकेत है। बंगाल एक नये सुनहरे इतिहास के आरम्भ की आशा लगाये बैठा है।

मां, माटी, मानुष नारे के साथ पश्चिम बंगाल में वाममोर्चा के ३४ वर्षों के सतत शासन के समाप्त करने के असंभव कार्य को सम्भव कर अग्निकन्या ममता बनर्जी ने एक नया इतिहास रचा है। जनता ने परिवर्तन के पक्ष में फैसला किया है। आम आदमी की आशा एवं आकांक्षा आसमान छू रही है। कृषि, उद्योग, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, बुनियादी ढांचे – हर क्षेत्र में विकास की उम्मीद है। बंगाल को दुबारा सोनार बांगला के रूप में देखने की जन-गण की आशा है।

शपथ समारोह के बाद बधाई का सिलसिला।

Experience Security

BCL Secure Premises Pvt. Ltd. (BCL SP) is a leading Integrated Security Solutions provider that maintains a Pan India presence . Aimed at providing world class security solutions to its clients, BCL SP is an **ISO 9001:2000** certified organisation with a constant endeavour to upgrade the quality of its resources and infrastructure. Our scope of work includes:

» Guarding Solutions including a range of specialisations such as Hotel Guards, Mall Guards, Hospital Security, PSOs etc

» Electronic Security Services
» Facility Management Services
» Blast Effect Protection and Mitigation
» Maritime Security Services
» Investigations
» Canine (K9) Services
» X-Ray Systems
» Intelligent Evacuation Systems
» Fire Prevention / Protection
» ESCAPE Rescue Systems for high rise buildings
» Training
» Consultancy Services

BCL SP has on board security specialists who have headed premier security agencies in Government (MHA) and armed forces of the nation. At BCL SP, it is our endeavour to understand the unique security needs of each client, and to fulfill these utilising the latest technology and expertise. We are emerging as one of the most competitive service providers in physical and technical security.

BCL SP can take up projects on a turn key basis right from conception to final execution. We also provide solutions on **Lease Basis**.

bclsecurepremises

ISO 9001:2000 Certified

Global Strategic Partners and Alliances

DiagNose
EMESCO Emergency & Security Solutions
ESCAPE Rescue Systems
GILARDONI
KCA
VERINT

Please feel free to contact us at

222, Mall Road
Flower Valley, Vasant Kunj
New Delhi - 110070

Ph: +91 11 261 23514
Fax: +91 11 26123816
Toll Free: 1800 118 383

Or email us at: info@securepremises.com

www.securepremises.com

© Copyright BCL Secure Premises Pvt. Ltd. 2010

अध्यक्षीय

नयी सरकार : उद्योग की अपेक्षाएं

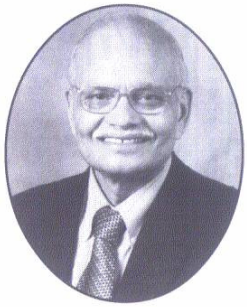

– हरि प्रसाद कानोड़िया

लोग १३ के अंक को भले ही अशुभ माने किंतु इस राज्य की नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने १३ के ३ और १ को मिलाकर चार का एक शुभांक तैयार किया है, जो कि चहुँमुखी विकास का पर्याय माना जाता है। वैसे इस राज्य के लिए तेरह मई का दिन ऐतिहासिक माना जाएगा। इस दिन राज्य में एक नया इतिहास लिखा गया है। वाममोर्चा के ३४ वर्षों के शासन का अंत हुआ और पश्चिम बंगाल के आसमान पर एक नये सूर्य का जन्म हुआ। तृणमूल कांग्रेस गठबंधन सरकार ने पूर्ण बहुमत प्राप्त कर एक स्थायी सरकार की संभावना दी है। नयी सरकार से सभी को काफी आशाएं हैं। कृषि का क्षेत्र हो अथवा उद्योग जगत्, सभी ममता बनर्जी की नयी सरकार से उम्मीदें लगाए बैठे हैं।

ममता बनर्जी की सरकार से उम्मीद की जाती है कि उद्योग धंधों के विकास के लिए अनुरूप परिवेश विकसित करें तथा सरकार यह आश्वस्त करें कि आंदोलन एवं कैडरवाद के नाम पर औद्योगिक शांति भंग न हो।

राज्य की शासन व्यवस्था में लालफीताशाही अभी भी मौजूद है। इसे अविलम्ब दूर करना होगा तथा नयी सरकार को यह सुनिश्चित करना होगा कि राज्य का द्रुतगति से विकास हो। ममता बनर्जी की सरकार से उम्मीद की जाती है कि उद्योग धंधों के विकास के लिए अनुरूप परिवेश विकसित करें तथा सरकार यह आश्वस्त करें कि आंदोलन एवं कैडरवाद के नाम पर औद्योगिक शांति भंग न हो। शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी ढ़ांचागत सुधार जरूरी है। आम आदमी के दुःख तकलीफ एवं दर्द को भी महसूस किया जाना चाहिए। मुख्यमंत्री बनने से पूर्व ममता बनर्जी ने यह वायदा भी किया था कि कृषि के साथ औद्योगिक क्षेत्र को भी पूरा महत्व व प्रोत्साहन देगी। जीने के लिए खेती-बाड़ी निःसंदेह मनुष्य की पहली जरूरत है। अतः कृषि के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता किंतु विकास का मानदंड कृषि एवं क्षेत्र की संयुक्त सफलता ही निर्धारित करती है। पुराने बंद पड़े कल-कारखानों का जीर्णोद्धार हो एवं नये क्षेत्रों में नये कारखाने खुले। बंगाल में दशकों से विकास ठप पड़ा है। नयी सरकार को इन तमाम बातों पर गंभीरता से गौर करना होगा। विकास कार्य को गति देनी होगी तथा विकास के नए दौर में बेकार युवकों को रोजगार मुहैया कराना आवश्यक है। बंगाल में आज कृषि के साथ ही सूचना तकनीक के क्षेत्र में भी भरपूर संभावनाएं हैं।

नयी सरकार से जनता की भारी उम्मीदें हैं। जनता का फैसला परिवर्तन के पक्ष में रहा है। नयी सरकार के सामने समस्याओं का अम्बार है जिससे उसे आने वाले ५ वर्षों तक जूझना है और उसका निवारण करना है। ममता बनर्जी को राज्य में एक नया राजनैतिक माहौल स्थापित कर आम आदमी की आकांक्षाओं को पूरा करना है। उन्हें जनसमर्थन प्राप्त है एवं जनता का विश्वास है कि राज्य उन्नति पथ पर ममता बनर्जी के नेतृत्व में अग्रसर होगा।

With Best Compliments From :-

M/s ROAD CARGO MOVERS (P) LTD.

1, GIBSON LANE, 2ND FLOOR, SUIT NO :- 211
KOLKATA -700 069

Tele No. : 2210-3480, 2210-3485
Fax No. : 2231-9221
e-mail : roadcargo@vsnl.net

BRANCHES & ASSOCIATES AT

DURGAPUR, HALDIA, CHENNAI, HYDERABAD, BANGALORE, ICHAPURAM, BHIVANDI, COCHI, MUMBAI, VIJAYWADA, COIMBATORE, GAZIABAD, PONDICHERRY, VISAKHAPATNAM

नई सरकार, नई उम्मीदें

पूरे उत्साह और उमंग के साथ काम करेंगी ममता

सुपरिचित उद्योगपति एवं सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री नन्दलाल रुंगटा का कहना है कि तृणमूल-कांग्रेस गठबंधन को भारी बहुमत मिला है। इस तरह से बहुमत के साथ नई सरकार का गठन होने जा रहा है, इसलिए यह सरकार अर्थात् ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली सरकार पूरे उत्साह और उमंग के साथ काम करेगी। पश्चिम बंगाल को विकास के पथ पर अग्रसर करने के लिए कई तरह के सुधारवादी कदम उठाने होंगे और आशा है वाममोर्चा विपक्ष के रूप में सकारात्मक भूमिका निभाते हुए नयी सरकार को सहयोग प्रदान करेगा।

– नन्दलाल रुंगटा

उम्मीद है, तेजी से विकास होगा

सेंचुरी प्लाई बोर्ड्स के चेयरमैन श्री सज्जन भजनका का कहना है कि तृणमूल कांग्रेस की सुप्रीमो सुश्री ममता बनर्जी ने अपने चुनावी घोषणा पत्र में पश्चिम बंगाल के विकास के लिए जो वादे किए थे, उम्मीद है कि वह सब पूरे होंगे। नई सरकार के सामने निश्चित रूप से नई-नई चुनौतियां हैं लेकिन दृढ़ इच्छाशक्ति से सारी चुनौतियों का सामना किया जा सकता है। ममता बनर्जी में संघर्ष करने की अद्म्य क्षमता है। इसलिए उम्मीद है कि राज्य का जो विकास रुका हुआ है वह सुश्री बनर्जी के नेतृत्व में तेजी से आगे बढ़ेगा।

– सज्जन भजनका

नई सरकार के सामने हैं कई नयी चुनौतियां

पैटन उद्योग समूह के प्रबंध निदेशक तथा सीआईआई की निर्यात पर राष्ट्रीय समितिके चेयरमैन श्री संजय बुधिया का कहना है कि पश्चिम बंगाल की सत्ता में बैठने जा रही नई सरकार के सामने नई-नई चुनौतियां हैं, जिनका सामना करना होगा। लेकिन उम्मीदें इसलिए हैं क्योंकि तृणमूल कांग्रेस सुप्रीमो ममता बनर्जी में संघर्ष करने की विपुल क्षमता है। अब पश्चिम बंगाल की खूबियों को, विशेषताओं को सामने लाना है, राज्य की प्रतिभा का इस्तेमाल करना है। जो लोग बंगाल से बाहर चले गए हैं, दूसरे राज्यों में निवेश कर रहे हैं, उन्हें इस तरह का संदेश देना है ताकि उनमें आत्मविश्वास सृजित हो और वे फिर से अपने पुराने घर लौट आएं।

– संजय बुधिया

ऐतिहासिक जन-समर्थन

विकास के लिये सभी का सहयोग चाहिए

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के उपाध्यक्ष व समाजसेवी रामअवतार पोद्दार का कहना है कि सरकार सबसे पहले लॉ. एंड ऑर्डर को व्यवस्थित करें। औद्योगिक विकास की गति तेज करें ताकि इन्फ्रास्ट्रेक्चर मजबूत हो सकें। साथ ही साथ माओवादी इलाकों में उद्योग धंधे की व्यवस्था करें जिससे वहाँ के वेकार व वेरोजगार आवाम को रोजगार मिलें एवं शांति बनी रहें। बंगाल को नयी ऊंचाइयों पर ले जाने के लिये सभी का सहयोग चाहिए। विकास जितनी जल्दी होगा, राज्य के लिये उतना ही वेहतर होगा।

– रामअवतार पोद्दार

नयी सरकार में पूर्ण विश्वास

भारी वहुमत से आयी ममता वनर्जी की सरकार में लोगों को पूरा विश्वास है। वहुत सारी आकांक्षाएं भी है। यदि इस विश्वास एवं आकांक्षाओं को मिलाकर नयी सरकार कार्य करें तभी सवकी अपेक्षाओं पर खरी उतर सकती है। अव समय आ गया है कि सव मिलकर वंगाल की उन्नति के वारे में सोचें। इसी में सवकी भलाई है। नयी सरकार को वधाई।

– नवल जोशी

चेंज इज आलवेज गुड

चेंज इज आलवेज गुड। ३४ साल वाद परिवर्तन हुआ है। विपक्ष से सत्ता में आयी ममता वनर्जी की नयी सरकार के काफी आशाएं है। लेकिन सरकार हमारी उम्मीदों पर कितना खरी उतरेगी, यह आनेवाला वक्त ही वतलाएगा। वहुमत से सत्ता में आयी नयी सरकार के पास फिलहाल अनुभवी लोगों की कमी है। कुछ लोग ही सत्ता-व्यवस्था से परिचित है। अभी तो सव नये है। फिर भी नयी सरकार से काफी उम्मीदें है। अव तक विपक्ष की भूमिका में रही नयी सरकार को पहली वार मौका मिला है – कुछ कर दिखाने का।

– वालकृष्ण माहेश्वरी

बंगाल का भविष्य उज्ज्वल

ममता वनर्जी ने अपने मेनिफेस्टो में पहले ही सारी वातें स्पष्ट कर दी थी कि मुख्यमंत्री वनने के वाद उनकी प्रमुखता किन-किन चीजों में होगी। अव यदि ममता इसी को इंप्लिमेंट कर दें तो वहुत कुछ हो सकता है। नयी सरकार इन्फ्रास्ट्रेक्चर की मजवूती पर ध्यान दें। लोगों को विश्वास में लाएं तथा यूनियनवाजी खत्म करें। साथ ही जो उद्यमी जिन किन्हीं कारणों से भी वंगाल से पलायन कर गए है, उन्हें पुनः वंग-भूमि के विकास से जोड़े। वंगाल का भविष्य उज्ज्वल है। वंगाल के पास भगवान का दिया सव कुछ है, आवश्यकता है कि उसका सही ढंग से उपयोग व उपभोग करें।

– हरि प्रसाद वुधिया

लॉ एंड ऑर्डर की व्यवस्था सुनिश्चित करें

सवसे पहले तो सरकार यहां की कार्य-संस्कृति विकसित करें। उत्पादकता वढ़े, इसे सुनिश्चित करें तथा लॉ एंड ऑर्डर को व्यवस्थित करें। हालांकि वंगाल में अन्य राज्यो की अपेक्षा लॉ एंड ऑर्डर की स्थिति काफी हद तक ठीक है फिर भी सरकार को इस पर और ध्यान देना होगा। औद्योगिक घराणों एक सरकार के वीच आपसी तालमेल वना रहे तथा वेरोजगारों की एक जो वड़ी समस्या राज्य में फैली है, उसे दूर करने के लिए औद्योगिकरण पर ज्यादा से ज्यादा ध्यान दें।

– आत्माराम सोंथलिया

अब बनेगा सपनों का नया बंगाल

युवा उद्यमी और मर्चेंट्स चेम्वर आफ कामर्स के अध्यक्ष श्री सुदेश कुमार सोंथलिया ने कहा है कि तृणमूल-कांग्रेस गठवंधन की सरकार से राज्य की जनता को काफी उम्मीदें हैं और अव सपनों का वंगाल वनाने का वक्त आ गया है। श्री सोंथलिया ने कहा कि सुश्री ममता वनर्जी के नेतृत्व में गठित होने जा रही नई सरकार को राज्य के हित में, राज्य के विकास के लिए सवको सहयोग करना होगा ताकि सही अर्थों में सपनों का वंगाल वन सके।

– सुदेश कुमार सोंथलिया

ममता की सोच सकारात्मक

उद्योगपति जे के सराफ कहते हैं कि तृणमूल कांग्रेस सुप्रीमो ममता बनर्जी की सोच सकारात्मक है। इसमें कोई शक नहीं है, दो राय नहीं है कि ममता बनर्जी के नेतृत्व में बनने जा रही पश्चिम बंगाल की नई सरकार के शासनकाल में जनता का भला नहीं होगा। निश्चित रूप से सुश्री बनर्जी समाज के हर वर्गों का ख्याल रखेंगी। उद्योग और व्यापार को बढ़ावा मिलेगा। दरअसल सबसे अच्छी बात यह है कि ममता बनर्जी के नेतृत्व में बनने जा रही सरकार में कांग्रेस भी शामिल है। कांग्रेस के नेतृत्व में केन्द्र में चल रही सरकार में तृणमूल कांग्रेस शामिल है इसलिए पारस्परिक सहयोग से बड़े-बड़े काम हो सकेंगे। केन्द्र सरकार का ममता बनर्जी को पूरा समर्थन मिलेगा। नई सरकार को प्राथमिकता के साथ राज्य में बंद पड़े उद्योगों को फिर से चालू करवाने की दिशा में कदम उठाना चाहिए, क्योंकि लंबे समय से कारखाने बंद पड़े हैं और मशीनों में जंग लग रहा है। अगर इन कारखानों को चालू किया जाता है तो बेरोजगारी की समस्या खत्म करने में काफी मदद मिलेगी। नए उद्योगों की स्थापना की दिशा में कोशिशें करने के साथ ही साथ अगर नई सरकार पहले से बंद पड़े उद्योगों को खोलने के सक्रिय प्रयास करे तो तत्काल प्रभाव से इसका फायदा हासिल होगा।

– जुगल किशोर सराफ

अच्छा ही करेगी नई सरकार

इमामी उद्योग समूह के संयुक्त अध्यक्ष श्री राधेश्याम गोयनका ने उम्मीद व्यक्त की है कि ममता बनर्जी के नेतृत्व में बनने जा रही नई सरकार राज्य के हित में अच्छा करेगी। इस सरकार को केन्द्र सरकार का पूरा समर्थन मिलेगा, कोष की कोई समस्या नहीं रहेगी। चुनावी घोषणा पत्र में ममता बनर्जी ने राज्य के औद्योगिक क्षेत्र, कृषि क्षेत्र और किसानों के हित में कदम उठाने के वादे किए थे, उम्मीद है कि सुश्री बनर्जी उन सभी वादों को पूरा करेंगी। उद्योग बढ़ेंगे तो रोजगार के अवसर भी बढ़ने लगेंगे।

– राधेश्याम गोयनका

राज्य में एक नए युग की शुरुआत

उद्योगपति एवं भारत चेम्बर ऑफ कामर्स के अध्यक्ष पवन पोद्दार ने ममता बनर्जी के नेतृत्व में तृणमूल-कांग्रेस गठबंधन की शानदार जीत पर बधाई देते हुए कहा है कि अब पश्चिम बंगाल में नए युग की शुरुआत हो गई है। श्री पोद्दार ने तृणमूल गठबंधन के पक्ष में मतदान करने के प्रदेशवासियों के निर्णय को ऐतिहासिक करार देते हुए कहा कि सुश्री बनर्जी के नेतृत्व में ऐसी उम्मीद है कि अब राज्य में आर्थिक समृद्धि तथा सामाजिक प्रगति के नए युग की शुरुआत होगी। नई सरकार को उद्योग और व्यापार के क्षेत्र में पहले से ही मौजूद समस्याओं से रू-ब-रू होते हुए समाधान का रास्ता खोजना होगा, ताकि औद्योगिकीकरण का सिलसिला तेज गति से शुरु हो सके। बड़े-बड़े उद्योगों की स्थापना से ही बड़े पैमाने पर बेरोजगारों के लिए रोजगार के अवसर पैदा हो सकते हैं। लेकिन बड़े उद्योगों की स्थापना के लिए आम सहमति भी जरूरी है।

– पवन पोद्दार

जनता के लिए काम करेंगी ममता

सुपरिचित उद्योगपति श्री महेन्द्र कुमार जालान कहते है कि पश्चिम बंगाल में अब तक वाममोर्चा सरकार अपनी पार्टी के लिए काम करती थी, लेकिन अब ममता बनर्जी के नेतृत्व वाली सरकार जनता के लिए काम करेगी। दलतंत्र का वक्त अब खत्म हो चुका है, अब सही अर्थों में लोकतंत्र का चेहरा देखने को मिलेगा। पहले से ही सुश्री बनर्जी पश्चिम बंगाल के सर्वांगीण विकास के लिए योजनाए तैयार कर चुकी हैं, उन पर सिर्फ अमल करना है। उन्होंने कहा कि नई सरकार जनता की उम्मीदों पर पूरी तरह से खरा उतरेगी, इसमें तनिक भी संदेह की गुंजाइश नहीं है।

– महेन्द्र कुमार जालान

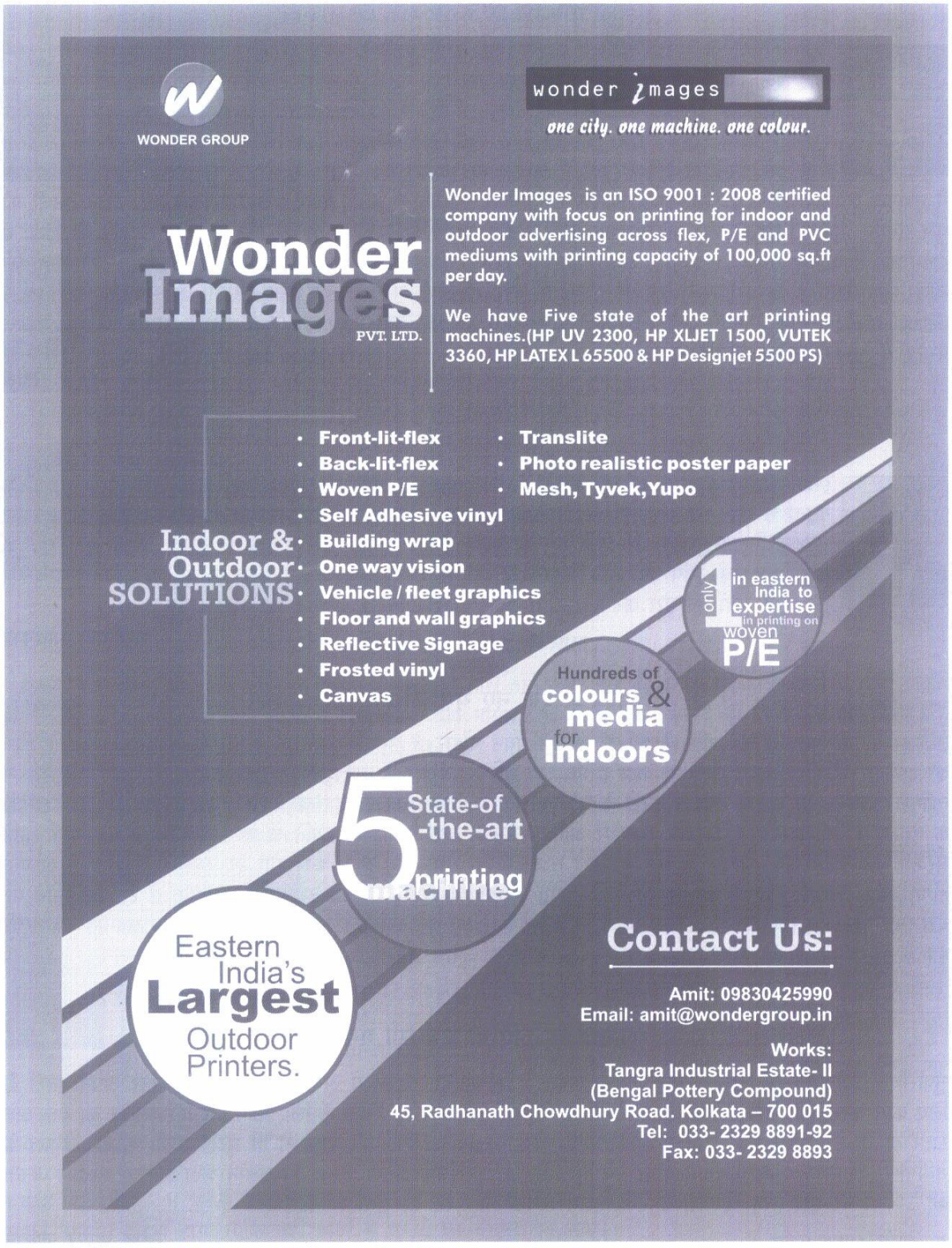
WONDER GROUP
wonder images
one city. one machine. one colour.
Wonder Images
PVT. LTD.
Wonder Images is an ISO 9001 : 2008 certified company with focus on printing for indoor and outdoor advertising across flex, P/E and PVC mediums with printing capacity of 100,000 sq.ft per day.
We have Five state of the art printing machines.(HP UV 2300, HP XLJET 1500, VUTEK 3360, HP LATEX L 65500 & HP Designjet 5500 PS)
Indoor & Outdoor SOLUTIONS
Front-lit-flex
Back-lit-flex
Woven P/E
Self Adhesive vinyl
Building wrap
One way vision
Vehicle / fleet graphics
Floor and wall graphics
Reflective Signage
Frosted vinyl
Canvas
Translite
Photo realistic poster paper
Mesh, Tyvek, Yupo
only 1 in eastern India to expertise in printing on woven P/E
Hundreds of colours & media for Indoors
5 State-of-the-art printing machine
Eastern India's Largest Outdoor Printers.
Contact Us:
Amit: 09830425990
Email: amit@wondergroup.in
Works:
Tangra Industrial Estate- II
(Bengal Pottery Compound)
45, Radhanath Chowdhury Road. Kolkata – 700 015
Tel: 033- 2329 8891-92
Fax: 033- 2329 8893

भ्रष्टाचार से बचना है हमें

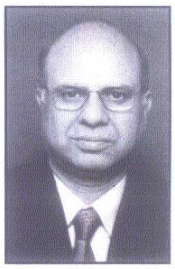

– संतोष सराफ
महामंत्री,
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

यूँ तो भ्रष्टाचार पिछले कुछ सालों से देश में सबसे बड़ी समस्या के रूप में उभरा है, लेकिन हाल ही में कई घोटालों का खुलासा होने से जिधर देखो उधर ही आजकल भ्रष्टाचार की ही चर्चा है। २जी स्पेक्ट्रम घोटाला, राष्ट्रमंडल खेल घोटाला और आदर्श सोसाइटी घोटाले का खुलासा होने के बाद भारतीय जनमानस में घोटाले के खिलाफ मुहिम तेज हुई है। ऐसा नहीं है कि भ्रष्टाचार ने सिर्फ नौकरशाहों, राजनेताओं आदि के बीच ही अपनी जगह मजबूत कर चुका है, बल्कि सच्चाई तो यह है कि भ्रष्टाचार आज दैनिक जीवन का एक अभिन्न हिस्सा बन चुका है। कौन भ्रष्ट है और कौन भ्रष्टाचार से मुक्त है, इसका आकलन कर पाना बहुत मुश्किल है। दरअसल भ्रष्टाचार परिवार, समाज और देश में रच-बस गया है। भ्रष्टाचार की परिभाषा बदल गई है। सिर्फ रुपयों का नाजायज लेनदेन ही भ्रष्टाचार नहीं रहा। भारत में भी अब भ्रष्टाचार जन्म से लेकर मृत्यु तक अपना असर दिखा रहा है। जन्म प्रमाण पत्र लेने के समय भी पुण्यम् पत्रम् चढ़ाना पड़ता है और मृत्यु के बाद अंतिम संस्कार के वक्त भी अगर आप जल्दबाजी में हैं, तो भी श्मशान घाट में बैठे 'महानुभावों' की जेब गरम करनी पड़ती है। इस तरह से भ्रष्टाचार ने सामाजिक जीवन के हर मोड़ पर अपनी मौजूदगी बना ली है। सवाल यह है कि इस भयंकर 'महामारी' से कैसे बचा जाए? आने वाली पीढ़ी को भ्रष्टाचार से कैसे मुक्त रखा जाए? इस बारे में सिर्फ सरकार को नहीं, सिर्फ राजनेताओं को ही नहीं, सिर्फ जांच एजेंसियों को ही नहीं, बल्कि हम सबको सोचना पड़ेगा।

भ्रष्टाचार ने भारतीय जनमानस में जिस तरह से अपनी पैठ बना ली है और अपने विविध रूप दिखाए हैं, उसके मद्देनजर इससे बच निकलना मुश्किल तो लग रहा है, लेकिन अगर दृढ़संकल्प के साथ इस महामारी का मुकाबला किया जाए, तो अपने आप को उससे परे रखना नामुमकिन नहीं है।

गौरतलब है कि देश में जितने भी बड़े आर्थिक घोटालों का पर्दाफाश हुआ है, उनमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उद्यमी-व्यवसायी समाज की भी संलिप्तता उजागर हुई है। यह बात अब कोई लुकी-छिपी नहीं रही, बल्कि जगजाहिर हो चुकी है। जहां तक मारवाड़ी समाज का सवाल है, इस समाज की एक अपनी समृद्ध परम्परा रही है। परम्परा रही है ईमानदारी की। अगर हम अंग्रेजों के शासनकाल का स्मरण करें, तो पता चलता है कि उस समय पगड़ी वाले मारवाड़ी व्यवसायी की अदालतों में भी इज्जत हुआ करती थी। अगर कोई मारवाड़ी पगड़ी लगाकर अदालत में किसी मामले की गवाही या सफाई देने जा पहुंचता था तो न्यायाधीश उसकी बात पर शत-प्रतिशत यकीन कर लिया करते थे। अब जबकि देश और समाज में चारों तरफ भ्रष्टाचार का बोलबाला है, ऐसे संक्रमण काल में हमें अपने समाज को बचाकर रखना है और ईमानदारी की समृद्ध परम्परा को बरकरार रखना है। क्योंकि भ्रष्टाचार ने कुछ इस कदर अपना प्रभाव जमा लिया है कि इससे बचना बहुत मुश्किल प्रतीत होने लगा है। हमें सबसे पहले अपने समाज की चिंता है, समाज की परम्परा की चिंता है और समाज के सम्मान की चिंता है। हम सबका कर्त्तव्य बनता है कि एक-दूसरे को भ्रष्टाचार के दलदल में धंसने से बचाने की सलाह दें। बचने के लिए, जागरुकता के लिए अगर जरूरत पड़े, तो पारस्परिक, वैचारिक सतर्कता अभियान भी चलाया जा सकता है।

viom
NETWORKS

A Leading Telecom Infrastructure Company Globally

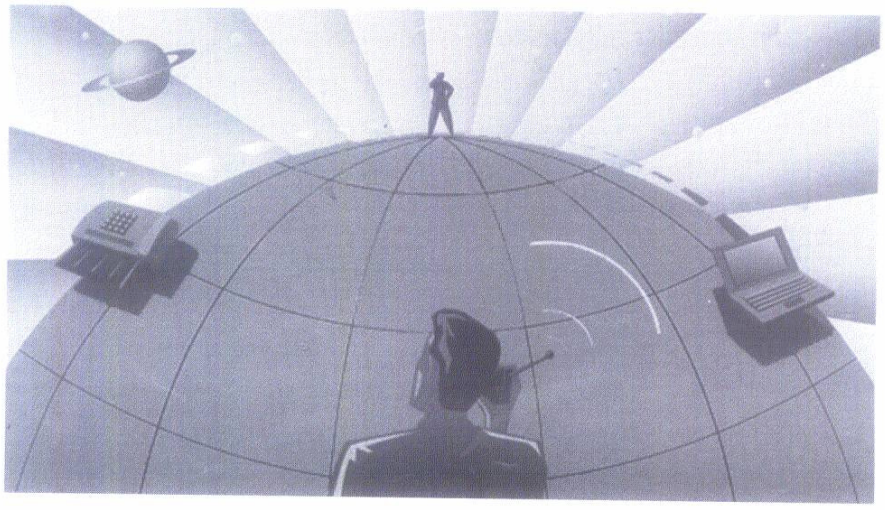

Independent entity with over 38,000 towers and over 83000 tenants

Plans to roll-out nearly 20-25,000 additional towers and take tenancy ratio to 2.5x

Strongest player in neutral host Shared In-Building Solutions (IBS)

First Indian Telecom Infrastructure Company to receive
ISO 14001 & OHSAS 18001 Certification

Viom Networks Limited

Corporate Office : 14 & 15th Floor, DLF Square, Jacaranda Marg, DLF City, Phase 2, Gurgaon - 122 002. India

समाज और संस्कार

– भानीराम सुरेका
(पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री, अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन)

पारिवारिक संस्कारों का हमारे व्यक्तित्व के निर्माण में अहम योगदान होता है। हम जहां कहीं भी जाएँ, जीवन के जिस क्षेत्र में भी जाएँ हमारे संस्कार वहाँ हमारी पहचान का आधार बनाते हैं। इसीलिए परिवार में संस्कारों के बीजारोपण की आवश्यकता पर बल दिया जाता है। संस्कार कई बार परिवार की पृष्ठभूमि का भी परिचायक होता है। हमारा आचरण देखकर लोग यह अंदाज़ लगा लेते हैं कि हमारी पारिवारिक पृष्ठभूमि क्या है एवं हमें कैसे संस्कार प्रदान किए गए हैं?

हम जब भी किसी से मिलते हैं तो "राम-राम", "जय हो", "राधे-राधे", "जय श्री कृष्ण", "प्रणाम" आदि शब्दों के द्वारा सामने वाले के प्रति अपनी भावना व्यक्त करते हैं। सामनेवाला भी प्रत्युत्तर में वैसे ही भावना व्यक्त करता है। ये शब्द यूं तो बड़े साधारण प्रतीत होते हैं पर इनकी महिमा अपार है। इनके जादू से कई बार असंभव भी संभव हो जाता है। इसीलिए हमारे दर्शन ने सुसंस्कृत बनने पर इतना महत्व दिया है। यहां तक कि जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन को सोलह संस्कारों से विभूषित किया है।

कुछ संस्कार व्यक्ति के जन्म के साथ ही आते हैं। ये पिछले जन्मों से जुड़े होते हैं। इस तथ्य की पुष्टि आज के मनोवैज्ञानिक भी करने लगे हैं। उनका शोध तो भारत की धारणा से भी बहुत आगे निकल गया है। उनका मानना है कि पिछले संस्कारों का प्रभाव जन्म-काल में ही विस्मृति में चला जाता है, किन्तु वह जीवन-भर व्यक्ति के साथ जुड़ा रहता है।

बच्चा जैसे-जैसे बड़ा होता है, उसके सामने माँ-बाप की सीख इतनी आ जाती है कि उसके अपने स्वरुप की समझ ढक जाती है। जीवन-व्यवहार में धीरे-धीरे अन्य मान्यताएं, अवधारणाएं, सामाजिक परम्परा, नियम-कायदे उसके मन पर एक आवरण बनाते जाते हैं, उसके संस्कारों का मूल स्वरूप ढकता चला जाता है।

माँ और पिता के अंश भी व्यक्ति में होते हैं जो उसके व्यक्तित्व-विकास में अपना प्रभाव जीवन-पर्यन्त बनाए रखते हैं। व्यक्ति का रिश्ता माता-पिता से कभी नहीं टूटता। माता-पिता, मित्र-परिजन और समाज के बीच रहकर व्यक्ति का एक नया व्यक्तित्व तैयार हो जाता है। वह सदा इस बात के प्रति सतर्क रहता है कि समाज उसको बुरा न मान ले। वह अच्छे से अच्छा आचरण करके समाज में अपना सम्मान बनाए रखने का प्रयास करता रहता है। यही भाव उसमें नए संस्कार प्रतिपादित करते है।

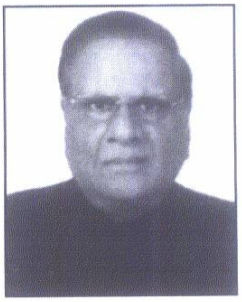

व्यक्ति के शरीर में पिछली सात पीढ़ियों तक का अंश होता है, जो उसके व्यक्तित्व में परिलक्षित होता है। व्यक्ति के मार्ग में ज्यों-ज्यों निमित आते हैं, वे इन संस्कारों से जुड़ते जाते हैं। कुछ संस्कार पलते जाते हैं, कुछ छूटते जाते हैं। उनकी छाप व्यक्ति के अवचेतन मन पर अंकित होती रहती है। फिर, समान प्रकृति का निमित आते ही पिछली स्मृति उसका व्यवहार याद करा देती है। पिछले अनुभवों के आधार पर वह अगला व्यवहार करता चला जाता है। यहां एक बात महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति की मूल प्रकृति पूरी उम्र ढकी ही रहती है। वह संसार में क्यों आया है, और वह कौन है, इसका आभास मात्र भी उसे नहीं हो पाता। किन्तु, उसका यह मूल स्वरूप उम्र भर अकुलाहट में दबा रहता है। हर क्षण होने वाले मन के अन्तर्द्वन्द्व का भी यही मूल है। वह कुछ करना चाहता है, नया व्यक्तित्व उसे नकारता चला जाता है। मूल व्यक्ति किसी के नियम-कायदों में रहना नहीं चाहता। अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखना चाहता है।

सामाजिक जीवन में होने वाली सभी प्रक्रियाएं और प्रतिक्रियाएं व्यक्ति के इस द्वन्द्व से ही उत्पन्न होती हैं। मूल और अन्य के निरन्तर सम्पर्क के संस्कारों की रस्साकशी ही उसके व्यक्तित्व को सकारात्मक या नकारात्मक बनाती है। उसके प्रकृतिप्रदत्त गुण और रचनात्मक क्षमता का विकास ही नहीं हो पाता। कुछ व्यक्तियों में जीवन के थपेड़े इन संस्कारों का विसर्जन कर देते हैं। यह जागरण उनको विकसित कर देता है। उनका रचनात्मक स्वरूप चमक उठता है और एक स्वतंत्र चिन्तन-धारा शुरु हो जाती है।

अपने जीवन को समझना हमारी जीवन-शैली का अंग रहा है। स्वाध्याय काल में स्वयं के बारे में चिन्तन करते रहना एक नियमित आवश्यकता है। इसी से व्यक्ति शनैः-शनैः अपने मूल स्वरूप तक पहुंच पाता है। अपने संस्कारों का परिष्कार कर पाता है। वह स्वयं को सृष्टि का अंग समझता है तथा आवरण दूर होने के साथ ही उसकी मूल शक्तियां जागृत हो जाती हैं। उसकी सामाजिक उपादेयता भी स्वतः बढ़ जाती है।

आज जब हम वैदिक समाज में जी रहें हैं तो संस्कारों के नए नए रूप हमारे सामने आते हैं। चूंकि रोजी-रोटी की तलाश में आज का आदमी देश ही नहीं, विदेशों में भी अपने पैर पसार रहा है इसीलिए जहां वह रहता है वहाँ की संस्कृति के कुछ अंश भी उसके संस्कारों में समाहित हो जाते हैं। अगर ऐसा व्यक्ति मूलभूत संस्कारों से हटकर कुछ करता है तो उसमें उसकी गलती नहीं है।

मैं ऐसे कई लोगों को जानता हूँ जो अपनी मातृभाषा तक नहीं जानते मगर मिलते ही राम-राम कहकर ऐसा प्रदर्शित करते हैं कि वे सही मायने में सामाजिक हैं। ऐसा करके वे कुछ भी गलत नहीं करते क्योंकि इसमें उनकी गलती नहीं है। वे तो ऐसे माहौल में रहे हैं जहां उन्हें अपनी मातृभाषा में बातचीत करने का मौका नहीं मिला। वर्षों दूसरी भाषा में बात करते-करते वे अपनी भाषा भूल गए। हमें खुश इस बात से होना चाहिए कि उन्होने कुछ तो बचाकर रखा है।

हमें अपने परिवार में संस्कारों को बनाए एवं बचाए रखने के लिए सतर्क होकर ऐसी व्यवस्था को ईज़ाद करना होगा जो छोटे से बड़े सभी को अच्छा लगे। कठोर होकर संस्कार के प्रति अनुशासित बनाना हमेशा खतरनाक होता है। सबसे बड़ा खतरा बच्चों के मन में यह बैठ जाना होता है कि ज़िंदगी भर उन्हें दूसरों के इशारे पर चलना होगा। संस्कारों के प्रति बच्चों को आकर्षित करने के लिए उन्हे यह समझाना ज्यादा जरूरी है कि इससे उन्हे क्या फायदा हो सकता है। तर्क की कसौटी पर जब कोई बात कही जाती है तो बच्चे उस पर अधिक अमल करते हैं।

मारवाड़ी समाज में संस्कारों का महत्व आदिकाल से रहा है। आज भी बहुत अंशों में संस्कार जीवित हैं तो इसीलिए कि चाहे-अनचाहे संस्कार के अनुरूप आचरण करना सामाजिक बाध्यता है। सामाजिक क्षेत्र से जुड़े लोगों को चाहिए कि वे संस्कार के प्रति नई पीढ़ी को आकर्षित करने के लिए सार्वजनिक तौर पर अपने पारिवारिक और सामाजिक संस्कार के अनुरूप आचरण करना शुरु करें। अब अपनी सामाजिक रीति के अनुसार संस्कार का चलन आम हो जाएगा तो निश्चित ही नई पीढ़ी के बच्चे भी उसका अनुसरण करने को बाध्य हो जाएँगे।

श्याम चरित का पाठ सभी कष्टों का निवारण करता है

– ताऊ शेखावाटी –

सवाईमाधोपुर प्रवासी राजस्थानी भाषा के देश के जाने माने कवि ताऊ शेखावाटी का कहना है कि खाटूश्याम बाबा को याद करने मात्र से भक्त के सभी कष्टों का निवारण हो जाता है। उन्होंने अपने ताजा व्यक्तिगत अनुभव के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि उन्हे देश के जानेमाने बिरला घराने की श्रीमती सरला बिरला ने काव्यपाठ के लिए उन्हें पिलानी बुलाया लेकिन इससे पूर्व ही वे गम्भीर रूप से बीमार हो गयी। ताऊ शेखावाटी ने उनके परिजनों की स्वीकृति से स्वयं द्वारा रचित खाटू श्याम चरित का अखंड पाठ किया और बाबा की कृपा से श्रीमती बिरला पूरी तरह से स्वस्थ हो गई। उल्लेखनीय है कि ताऊ शेखावाटी ने खाटू श्याम चालीसा व खाटू श्याम चरित की स्वयं रचना की है। अनेक स्थानों पर ताऊ शेखावाटी के आचार्यत्व में श्याम चरित के २४ घंटे के अखंड पाठ का आयोजन किया जा चुका है।

संयुक्त परिवार में बदलाव की बयार

– द्वारका प्रसाद डाबरीवाल

संयुक्त परिवार हमारी विरासत रही है। मारवाड़ी समाज आज जिस स्थिति में है वहाँ तक उसे पहुंचाने का श्रेय संयुक्त परिवार व्यवस्था को जाता है। वर्षो से यह व्यवस्था समाज की ताकत रही हैं। एक समय अपनी मिट्टी से दूर रहने वाले समाज के लोगों को इस व्यवस्था ने सुरक्षा प्रदान किया तथा व्यवसायिक गतिविधियों के लिए आवश्यक सहयोगी उपलब्ध कराये। पर बदलते दौर में इस व्यवस्था की अहमियत खत्म होती जा रही है। आज जहां लोग एकल परिवारों में सुख ढूंढ रहे हैं वहां अब यह जानना आवश्यक हो गया है कि क्या वाकई संयुक्त परिवार आज के दौर में हमारी जरूरत हैं?

संयुक्त परिवार

यहां प्यार और सम्मान है

संयुक्त परिवारों में एक साथ तीन या तीन से ज्यादा पीढ़ियां एक ही छत के नीचे रहती हैं। इनमें दादा-दादी, चाचा-ताऊ, बेटे-बहू, पोते-पोतियां सभी शामिल हैं। समाज शास्त्रियों के मुताबिक संयुक्त परिवारों में प्यार का दायरा बड़ा होता है। बच्चों को सभी का लाड-प्यार मिलता है। जाहिर है कि उनका मानसिक विकास ज्यादा होता है। परिवार में बड़े-बुजुर्ग होने की वजह से बच्चों में संस्कार जल्दी आ जाते हैं। परिवार में यदि कोई विधवा है, तो उसकी देखभाल केवल संयुक्त परिवार में ही हो सकती है। प्यार और सम्मान बच्चों को यहां बचपन से मिल जाता हैं।

आमदनी अठन्नी खर्चा रूपया

समाज शास्त्रियों के मुताबिक ज्यादातर भारतीय संयुक्त परिवारों में कमाने वाले एक या दो लोग होते हैं। कमाई का साधन आमतौर पर एक कॉमन दुकान, परंपरागत बिजनेस या दुकान या भवन से आने वाला किराया होता है। परिवार का मुखिया प्रत्येक एकल परिवार को उनकी जरूरतों के मुताबिक पैसा देता है और जिम्मेदारियां बांटता है। समाजशास्त्री कहते हैं कि संयुक्त परिवार में खर्चे आमदनी के मुकाबले बहुत ज्यादा होते हैं। फिर हर एक की अपनी महत्वाकांक्षाएं होती हैं। यही वजह है कि संयुक्त परिवार टूट जाते हैं।

परिवार महत्वपूर्ण

समाज के कई बड़े संयुक्त परिवारों से मिलने पर एक बात सामने आई कि इन परिवारों में व्यक्ति से ज्यादा अहमियत परिवार की होती है। वहां व्यक्तिगत पहचान कोई मुद्दा नहीं होता। परिवार में कुछ बंदिशें होती हैं, जिनका परिवार के सभी सदस्यों को अनिवार्य रूप से पालन करना पड़ता है। समाजशास्त्री मानते हैं कि संयुक्त परिवारों को सही ढंग से चलाने के लिए लोगों को खुद से ज्यादा परिवार को महत्वपूर्ण मानना पड़ता है।

आसान नहीं नया घर

यह सच है कि महंगाई के इस दौर में यदि पति-पत्नी दोनों जॉब में हैं, तो भी नया घर बनाना आसान नहीं है। हालांकि ऋण सुविधाओं ने ये दिक्कतें काफी हद तक कम कर दी हैं, पर एकल परिवारों में रिस्क फेक्टर हमेशा मौजूद रहता है। जाहिर है कि ऐसे में संयुक्त परिवार के साथ रहना ही एकमात्र विकल्प है।

बच्चों का विकास

बच्चों को भविष्य में बेहतर जीवन जीने और सभ्य नागरिक बनने का प्रशिक्षण संयुक्त परिवार में ही मिल सकता है, और यह काम परिवार के वरिष्ठ लोग अपने व्यवहार से कर लेते हैं। बच्चों का यहां जीवन के नैतिक और सामाजिक पक्ष से अच्छी तरह परिचय हो जाता है, पर एकल परिवारों में माता-पिता की व्यस्तताओं की वजह से बच्चों को संस्कार नहीं मिल पाते।

थोड़ा त्याग और सुखी परिवार संयुक्त परिवार की सफलता के लिए एक बात सामान्य रूप से निकलकर आती है, वह है थोड़ा त्याग। क्योंकि जब अहम टकराते हैं, तो परिवार के टूटने में वक्त नहीं लगता। समाजशास्त्री मानते हैं कि संयुक्त परिवार में व्यक्ति खुद की बजाय परिवार को बड़ा मानकर चले, तो परिवार के टूटने की गुंजाइश नहीं रहती। इसके लिए वे आपसी सम्मान को तरजीह देते हैं।

एकल परिवार

प्यार तो यहां भी है

पति-पत्नी और बच्चे, ज्यादा से ज्यादा उनके दादा-दादी। एकल परिवार की यही रूपरेखा है। ऐसा नहीं है कि एकल

परिवारों में प्यार का कोई अभाव पाया जाता है, पर यह बहुत सीमित होता है। एकल परिवारों में बच्चों को सिखाने वाले केवल उनके माता-पिता होते हैं। और यदि पति-पत्नी दोनो की जॉव में हों, जैसा ही आजकल पाया जाता है, तो बच्चों को प्यार नसीब नहीं हो पाता।

कमाई भी, सुविधाएं भी

मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि आज की पीढ़ी के हरेक युवा की यह नैसर्गिक महत्वाकांक्षी होती है कि उनका खुद का घर और गाड़ी हो। वह अपने कमाए पैसों को सिर्फ अपने और अपने परिवार पर खर्च करें। यह सच है कि एकल परिवारों में बच्चों को अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएं और कपड़े उपलब्ध हो जाते हैं। जाहिर तौर पर एक मध्यम संयुक्त परिवार में यह संभव नहीं है। समाजशास्त्री कहते हैं कि ऋण सुविधाओं की वजह से सारी सुविधाएं जुटाना अब काफी आसान हो गया है। पर एकल परिवार में यदि पति-पत्नी में से किसी एक की असामयिक मौत हो जाए, तो पूरा परिवार लगभग खत्म हो जाता है। इसलिए यहां असुरक्षा का तत्व ज्यादा होता है।

चिंता इमेज की

संयुक्त परिवारों के टूटने की एक बड़ी वजह समाजशास्त्री पर्सनल इगो को मानते हैं। वे कहते हैं कि आज की पिज्जा-बर्गर जिंदगी में नई पीढ़ी के उसूलों की बातें बेमानी हैं। वे अपनी तरह से जिंदगी जीना चाहते हैं, जहां उनकी भी कोई पहचान हो। नाइट क्लब, डांस पार्टी और आधुनिक जीवन शैली उनकी जिंदगी का हिस्सा है, और उन्हें लगता है कि परिवार से अलग रहकर ही वे इन सारी चीजों को बेहतर ढंग से एंजॉय कर सकते हैं।

कम लोग, कम समस्याएं

आमतौर पर एकल परिवारों का कॉन्सेप्ट है-कम लोग, कम समस्याएं। व्यक्तिगत जरूरतों, प्राइवेसी और महत्वाकांक्षाओं के चलते एकल परिवारों की संख्या में इजाफा हो रहा है। मनोविश्लेषक मानते हैं कि शादी के बाद व्यक्ति की मनोदशा काफी बदल जाती है और वह शादी के कुछ वर्षो तक निहायत निजी जिंदगी जीना चाहता है। इसके लिए वह अपने परिवार से अलग होना बेहतर मानता है।

अच्छे अवसर

स्वाभाविक रूप से बढ़ते एकल परिवारों की एक बड़ी वजह है, बेहतर नौकरियां। उदारीकरण के बाद नौकरी के अवसरों में वृद्धि हुई है। युवा नौकरी के लिए अपने परिवारों को छोड़कर दूर-दराज शहरों में बसने लगे हैं। ऐसे में नया एकल परिवार बनना स्वाभाविक सी बात है। इसके साथ एक बात यह भी सामने आई है कि पुराने लोग अपनी पैतृक जगह को छोड़ कर अपने बेटों के साथ रहना भी नहीं चाहते।

सोच का टकराव

संयुक्त परिवार में तीन पीढ़ियां एक साथ रहती हैं। जाहिर है कि नई और पुरानी पीढ़ी के बीच सोच में कई वर्षो का अंतर होता है। लिहाजा आपस में सोच का टकराव होता है। इस कारण भी कई दफा परिवारों में विभाजन हो जाता है। हालांकि अब काफी हद तक पुरानी पीढ़ी के लोगों ने नए जमाने की बातों को अपना लिया है, और इन सभी बदलावों को वे सहज लेने लगे हैं।

यह भी है ट्रेंड

ऐसा नहीं है कि एकल परिवार बनने की वजह सिर्फ संयुक्त परिवारों में तनाव या और कोई बात है। आजकल एक ही परिवार के लोगों में एक ही शहर में राजी खुशी से अलग-अलग रहने का भी प्रचलन बढ़ा है। ऐसे मामलों में माता-पिता और बेटों के बीच यह सहमति हो जाती है कि वे एक-दूसरे की जिंदगी में किसी तरह का हस्तक्षेप नहीं करेंगे। आज के दौर को देखते हुए माता-पिता और बेटे-बहू अपने-अपने मुताबिक जिंदगी जीना चाहते हैं और उन्हें एक-दूसरे से कोई शिकायत भी नहीं रहती। जरूरत के वक्त वे एक-दूसरे की मदद भी करते हैं।

बढ़ते तलाक के मामले

मनोवैज्ञानिक बताते हैं कि एकल परिवारों में पति-पत्नी के बीच छोटी-छोटी बातों पर अहम टकराने लगते हैं। उनके बीच के मनमुटाव को दूर करने के लिए उनके पास कोई तीसरा व्यक्ति नहीं होता है। अक्सर ऐसे मामलों में तलाक की नौबत आ जाती है। जानकार मानते है कि तलाक के ज्यादातर मामले एकल परिवारों से आते हैं। इसके अलावा आत्महत्या और मानसिक अवसाद से जुड़े ज्यादातर मामले भी एकल परिवारों की देन हैं। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि अकेले रहने वाले व्यक्ति हमेशा एक अज्ञात डर से भयभीत रहते हैं और कई बार यह डर इतना बढ़ जाता है कि नतीजा आत्महत्या के रूप में सामने आता है।

सारांश

संयुक्त परिवार का विकल्प मिलना मुश्किल है पर जमाने के चलन के मुताबिक अब हमें यह मान लेना चाहिए कि संयुक्त परिवार की आवधारणा को पुनः लागू करना बेहद मुश्किल है इसीलिए ऐसी व्यवस्था को ईज़ाद करना चाहिए जो परिवार को एक सूत्र में बांधे रखने में सहायक हो। परिवार के लोग भले ही अलग-अलग रहें पर निरंतर संपर्क में रहें और उनमें संवाद की प्रक्रिया चालू रहे, यही आज की सबसे बड़ी जरूरत है।

सम्मेलन का वर्तमान स्वरूप : एक चिंतन

– पुष्पा चोपड़ा
संस्थापक सचिव, अ.भा. मा. महिला सम्मेलन

मारवाड़ी सम्मेलन से मेरा जुड़ाव १९७५ में आयोजित भागलपुर अधिवेशन से हुआ जहाँ मुझे महिला मंत्री का भार सौपा गया तब से लगातार अथक प्रयास के साथ मैने बहनों को जागरूक कर एक सशक्त मंच बनाकर १९८३ में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन पटना के श्री कृष्ण मेमोरियल हाल में कराया। १९८५ में गोहाटी में अखिल भारतवर्षीय युवा मंच का गठन हुआ। महिला एवं युवा किसी परिवार व समाज की नींव है इसको मद्देनजर रख आदरणीय नंद किशोर जालान जी ने दोनों को स्वतंत्र प्रभार दिया ताकि समाज के तीन विंग पुरुष महिला एवं युवा अपने स्तर से कार्य कर समाज को सशक्त बनाएं, आज स्थिति इसके बिल्कुल विपरीत हो गई है। हमारा परिवार बिखर कर तीन टुकड़े में विभक्त हो गया है। प्रौढ़, महिला एवं युवा। अब युवा मंच में भी महिला मंच अलग बन रहा है। आज समय की मांग है संगठित समाज जबकि आज हमारा समाज बिखर गया है। इन तीनों का विशेष काम अधिवेशन कराना हो गया है। एक दिन का अधिवेशन-खर्च कम से कम दो लाख उपस्थिति बहुत कम। विचार एवं प्लानिंग का वक्त ही नहीं रहता है। प्रस्ताव पारित तो हो जाते है पर उसका इम्पलीमेन्टेसन नहीं हो पाता है क्यों कि इसके लिए संगठित प्रयास एवं प्रबल इच्छाशक्ति की नितान्त आवश्यकता है जिसका अभाव अधिवेशनों में जाकर साफ नजर आता है। मेरे निम्न सुझाव पर गौर करने का कष्ट करें –

(१) यथा संभव तीनों विंग का अधिवेशन साथ हो जिससे संगठन मजबूत होगा एवं सम्मेलन में पारित प्रस्तावों एवं निर्णयों में सर्वसम्मति होने पर समाज पर इसका असर अवश्य होगा। सामाजिक कुरीतियों आडम्बर - दिखावा, तलाक आदि पर काफी हद तक रोक लगाई जा सकेगी।

(२) महिला मंच – युवा मंच एवं सम्मेलन के पदाधिकारी त्रैमासिक बैठक कर समाज की दिशा पर चिन्तन कर दो-चार कॉमन प्रोग्राम तय करें। यह नियमावली भारतीय तथा प्रादेशिक स्तर पर लागू की जाए।

(३) राजनीति में हमारी भागीदारी शून्य के बराबर हैं किस प्रकार ज्यादा संख्या में हमारे प्रतिनिधि आएँ यह विचारणीय है। महिला रिजर्वेशन का लाभ प्रत्येक समाज उठा रहा है तथा सचेत होकर इस दिशा में कार्यरत भी है और हम अपने को किंग मेकर कहकर ही खुश हो जाते है। समय की मांग को देखते हुए जिला एवं राज्यों के चुनाव में महिलाओं एवं युवाओं को ज्यादा संख्या में खड़ा करके उन्हें आर्थिक एवं मानसिक स्पोर्ट करें।

(४) समाज के कमजोर तबके के लिए हमने आजतक कोई प्लानिंग ही नहीं की है इस दिशा में कार्य करना नितान्त आवश्यक है संगठन पर इसका व्यापक प्रभाव पड़ेगा। हम व्यापारी हैं – हमें युवाओं – महिलाओं को व्यावसायिक ट्रेनिंग-लघु-कुटीर उद्योगों के लगाने में उनका दिशा निर्देश तथा यथासंभव सहयोग करना होगा।

पिछले पन्द्रह सालों में मैंने लघु-कुटीर उद्योगों के माध्यम से महिलाओं-लड़कियों को आर्थिक स्वावलंबन की दिशा में काफी कार्य किया एवं अभूतपूर्व सफलता मिली। फिर हमारा समाज तो स्वयं में काफी सक्षम है – आवश्यकता है कमजोर वर्ग की पीड़ा को महसूस कर उन्हें जोड़ने की। मुझे पूरा विश्वास है श्री हरिप्रसाद जी कानोड़िया की अध्यक्षता में मारवाड़ी परिवार का संगठन मजबूत होकर समाज के चतुर्दिक विकास में अपनी अहम् भूमिका निभाएगा।

ALL INDIA MARWARI FEDERATION

NATIONAL EXECUTIVE COMMITTEE 2011-2013

NATIONAL OFFICE BEARERS

Sri Hari Prasad Kanoria
President

Sri Ram Awatar Poddar
Vice President

Sri Badri Prasad Bhimsaria
Vice President

Sri Santosh Agarwal
Vice President

Sri Ram Kumar Goyal
Vice President

Sri Ramesh Chand Gopikishan Bang
Vice President

Sri Om Prakash Khandelwal
Vice President

Sri Santosh Saraf
General Secretary

Sri Atmaram Sonthalia
Treasurer

Sri Sanjay Harlalka
Joint General Secretary

Sri Kailashpati Todi
Joint General Secretary

EX-NATIONAL PRESIDENTS (EX-OFFICIO)

Sri Nand Kishore Jalan
Sri Mohan Lal Tulsian
Sri Hari Shankar Singhania
Sri Sitaram Sharma
Sri Hanuman Prasad Sarawagi
Sri Nandlal Rungta

EX-NATIONAL PRESIDENTS (EX-OFFICIO)

Sri Ratan Lal Shah
Sri Bhani Ram Sureka
Sri Ramawatar Poddar

PROVINCIAL PRESIDENTS & SECRETARIES (EX-OFFICIO)

Sri Naresh Chandra Vijayvargiya
President
Andhra Pradesh Pradeshik Marwari Sammelan

Sri Rampal Attal
Secretary
Andhra Pradesh Pradeshik Marwari Sammelan

Sri Vijay Kumar Kishorpuria
President
Bihar Pradeshik Marwari Sammelan

Sri Rajesh Bajaj
Secretary
Bihar Pradeshik Marwari Sammelan

Sri Vinay Saraogi
President
Jharkhand Prantiya Marwari Sammelan

Sri Kamal Kumar Kedia
Secretary
Jharkhand Prantiya Marwari Sammelan

Sri G. N. Purohit
President
Madhya Pradesh Pradeshik Marwari Sammelan

Sri Kamlesh Kumar Nahata
Secretary
Madhya Pradesh Pradeshik Marwari Sammelan

Sri Jaiprakash Shankarlal Mundhra
President
Maharashtra Pradeshik Marwari Sammelan

Sri Nemichand Poddar
Secretary
Maharashtra Pradeshik Marwari Sammelan

Dr. S. S. Harlalka
President
Purvottar Pradeshik Marwari Sammelan

Sri Omprakash Choudhury
Secretary
Purvottar Pradeshik Marwari Sammelan

Sri Kailash Mull Duggar
President
Tamil Nadu Pradeshik Marwari Sammelan

Sri Vijay Kumar Goyal
Secretary
Tamil Nadu Pradeshik Marwari Sammelan

Sri Vijay Gujarwasia
President
West Bengal Pradeshik Marwari Sammelan

Sri Ramgopal Bagala
Secretary
West Bengal Pradeshik Marwari Sammelan

Sri Panna Lal Baid
President
Delhi Pradeshik Marwari Sammelan

Sri Vijay Kedia
Secretary
Utkal Pradeshik Marwari Sammelan

Sri Naryan Pd. Agarwal
President
Karnataka Pradeshik Marwari Sammelan

Sri Rajesh Kasera, C. A.
President
Uttar Pradesh Pradeshik Marwari Sammelan

Sri Pawan Kumar Goenka
Secretary
Delhi Pradeshik Marwari Sammelan

Sri B. L. Jain
President
Chattisgadh Pradeshik Marwari Sammelan

Sri Devendra Kumar Soni
Secretary
Karnataka Pradeshik Marwari Sammelan

Sri Aakash Goenka. MBA
Secretary
Uttar Pradesh Pradeshik Marwari Sammelan

Sri Surendra Lath
President
Utkal Pradeshik Marwari Sammelan

Sri Hari Shankar Sharma
Secretary
Chattisgadh Pradeshik Marwari Sammelan

EXECUTIVE COMMITTEE - MEMBERS

Sri Dwarka Prasad Dabriwal
Sri Atul Churiwal
Sri Prahalad Rai Agarwal
Sri Sajjan Bhajanka
Sri Bishwambhar Dayal Sureka
Sri Rajendra Khandelwal
Sri Narayan Prasad Madhogadhia
Sri Shyam Sunder Beriwal
Sri Ghanshyam Das Agarwal
Smt. Rachna Nahata
Smt. Uma Saraff
Sri Birendra Prakash Dhoka
Sri Rampal Agarwal (Nutan)
Sri Vijay Kumar Manglunia

Sri Hari Prasad Budhia
Sri Sarwan Kr Todi
Sri Mamraj Agarwal
Sri Chiranjeelal Agarwal
Sri Shyamlal Dokania
Sri Omprakash Poddar
Sri Ramesh Kr. Garg
Sri Balram Sultania
Sri Basant Mittal
Sri Viswanath Marothia
Sri Anil K. Jajodia
Sri Shyam Sunder Soni
Sri R. S. Falor

Sri Babulal Dhanania
Sri Nawal Joshi
Sri Jugal Kishore Jaithalia
Sri Bal Krishan Maheshwari
Sri Ravindra Kumar Ladia
Sri Harikishan Choudhary
Sri P. D. Tulsyan
Sri Shyam Sunder Agarwal
Sri Jagdish Pd. Choudhury
Sri Ravindra Chamria
Sri Jugal Kishore Saraff
Sri Ramnath Jhunjhunwala
Sri Nandkishore Agarwal

PERMANENT SPECIAL INVITEES

Sri Viswanath Kedia
Sri Ishwari Pd Tantia
Sri Dharam Chand Agarwal
Sri Viswanath Chandak
Sri Champalal Saragwi
Sri Chandulal Agarwal
Sri Sajjan Kr. Tulsyan
Sri Govind Prasad Kejriwal

Sri Harshvardhan Neotia
Sri Rajendra Kr. Bachachhawat
Sri Harak Chand Kankaria
Sri Kamal Kumar Duggar
Sri Sadhuram Bansal
Smt. Kumkum Agarwal
Sri Shambhu Chaudhary

Sri Narain Prasad Dalmia
Sri Balkrishan Das Mundhra
Sri Kamal Kumar Duggar
Sri Basant Kumar Nahata
Sri Mahesh Kr. Saharia
Sri Banwarilal Sharma (Soti)
Sri Suryakaran Sarswa

NATIONAL PRESIDENT & SECRETARY (EX-OFFICIO) YUVA MANCH & MAHILA SAMMELAN

Sri Jitendra Gupta Sri Sanjay Agarwal Smt. Smita Chechani Smt. Durga Jaithalia

प्रांतीय समाचार

दृढ़ निश्चय तथा जीवटता की प्रतिमूर्ति रमेश बंग

– दीपेन्द्र सिंह शेखावत

महाराष्ट्र प्रदेश से प्रकाशित राजस्थानी की एकमात्र पत्रिका 'म्हारो देस दिसावर' के विशेषांक का विमोचन करते हुए राजस्थान विधान सभा अध्यक्ष श्री दीपेन्द्र सिंह शेखावत, आं.प्र. विधान सभा के डिप्टी स्पीकर श्री नांदेला मनोहर व उपस्थितजन।

"आज के इस प्रतिस्पर्द्धात्मक युग में पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण भावी पीढ़ी को हमारी सांस्कृतिक व सनातन परम्पराओं के प्रति विमुख सा करता जा रहा है। ऐसे समय में धर्म के प्रति आस्था, समर्पित भाव से जनसेवा तथा सांस्कृतिक मुल्यों के संरक्षक समाज सेवियों के जीवनवृत के पठन से युवा वर्ग में चेतना जाग्रत होगी। महेश बैंक के चेयरमैन श्री रमेश कुमार बंग ऐसे ही प्रखर व्यक्तित्व के धनी है। इनकी उपलब्धियों को 'म्हारो देस दिसावर' पत्रिका ने प्रकाशित कर युवा वर्ग को प्रेरणा देने का कार्य किया है।" उपरोक्त उद्‌गार राजस्थान विधान सभा के अध्यक्ष माननीय श्री दीपेन्द्र सिंह शेखावत ने दक्षिण भारत की सर्वप्रथम बहुराज्यीय अनुसुचित बैंक, महेश बैंक के अभी तक के सबसे युवा चेयरमैन श्री रमेश कुमार बंग के ९ मई को विवाह की २७ वीं वर्षगाँठ पर महाराष्ट्र प्रदेश से प्रकाशित एकमात्र राजस्थानी भाषा की सामाजिक पत्रिका 'म्हारो देस दिसावर' के मई – २०११ का विशेषांक हैदराबाद स्थित लेक व्यू गेस्ट हाउस में विमोचित करते हुए व्यक्त किए।

विशेषांक के विमोचन के अवसर पर आन्ध्र प्रदेश विधान सभा के डिप्टी स्पीकर श्री नान्देला मनोहर, नगर के सुप्रसिद्ध उद्योगपति ओम प्रकाश जाखोटिया, कांग्रेस के नेता धर्मेन्द्र गोयल, महेश बैंक के निदेशक लक्ष्मीनारायण राठी, सतीश सरायवाला, रिदीश जागीरदार, संदीप बोहरा के साथ पत्रिका के व्यवस्थापक श्री बृजकिशोर धूत विशेष रूप से उपस्थित थे।

आन्ध्र प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन का चुनाव सम्पन्न

आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के निवर्तमान अध्यक्ष श्री रमेश कुमार बंग एवं अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व उपाध्यक्ष डॉ. आर.एम. साबू, नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री नरेशचन्द्र विजयवर्गीय, महामंत्री रामपाल अट्टल एवं कोषाध्यक्ष श्री रामप्रकाश भण्डारी का सम्मान करते हुए, साथ में सदस्यगण।

आन्ध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का चुनाव, सम्मेलन के प्रदेश अध्यक्ष रमेश कुमार बंग की अध्यक्षता एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के निवर्तमान उपाध्यक्ष डॉ आर. एम. साबू के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन द्वारा जारी विज्ञप्ति के अनुसार सम्मेलन के निवर्तमान महामंत्री नरेशचन्द्र विजयवर्गीय का अध्यक्ष, रामपाल अट्टल का महामंत्री एवं रामप्रकाश भण्डारी का कोषाध्यक्ष के रूप में सर्वसम्मति से चयन किया गया। नवीन सत्र हेतु कार्यकारिणी गठन का दायित्व नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को दिया गया।

इस अवसर पर नवनिर्वाचित अध्यक्ष नरेशचन्द्र विजयवर्गीय ने आभार व्यक्त करते हुए पूर्ण योग्यता और क्षमता से अपने दायित्व निर्वाह का विश्वास दिलाया और समाज बन्धुओं से संगठन का सदस्य बनने का आह्वान किया। नवनिर्वाचित महामंत्री रामपाल अट्टल ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

इससे पूर्व सम्मेलन की ओर से समाज की दिवंगत आत्माओं को दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। तत्पश्चात् विगत बैठक का कार्य विवरण प्रस्तुत किया गया, जिसे सर्वसम्मति से स्वीकृति प्रदान की गयी। दक्षिण भारत की प्रथम बहुराज्यीय अनुसूचित नगरीय सहकारी महेश बैंक के अध्यक्ष के रूप में सेवाएँ दे रहे सम्मेलन के निवर्तमान अध्यक्ष रमेश कुमार बंग का सम्मान किया गया। इस अवसर पर कन्हैयालाल पाण्डेय, लक्ष्मीनिवास सारडा, अनिल कुमार अग्रवाल, अरविन्द बाकलीवाल, सत्येन्द्र जैन, रसिक बलदोरा, राजेश विजयवर्गीय, अजीत कुमार वर्मा, गोपाल शर्मा, हरिप्रसाद चाण्डक, मदनलाल संचेती, अनिल सूद, अशोक दूबे, सुखदेव शर्मा, अनिल कुमार जोपट, प्रकाश जोशी, रितेश अग्रवाल आदि उपस्थित थे।

कानपुर शाखा का नवसंवत्सर मेला

मारवाड़ी पंचांग पत्रिका २०६८ का विमोचन

मारवाड़ी पंचांग पत्रिका संवत् २०६८ का विमोचन करते बाये से महामंत्री अनिल परसरामपुरिया, पूर्व अध्यक्ष श्रीगोपाल तुलस्यान, प्रदेश महामंत्री आकाश सोम गोयनका, संयोजक अरुणकुमार सिंहानिया, अध्यक्ष सत्यनारायण सिंहानिया एवं प्रदेश अध्यक्ष राजेश कसेरा।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की कानपुर शाखा द्वारा रामकृपा श्यामकृपा सिविल लाइन्स में भव्य "नवसंवत्सर मेला" स्वागतम् संवत् २०६८ का आयोजन रविवार ३ अप्रैल २०११ को किया गया। इस अवसर पर "मारवाड़ी पंचांग" पत्रिका संवत् २०६८ का विमोचन भी किया गया। मेले में खानपान, खेल, विक्रय योग्य सामग्री तथा कॉरपोरेट घराणों के भव्य ३० स्टॉल लगाए गए। इन स्टालों का सम्मेलन के सदस्य परिवारों ने खूब लुत्फ उठाया। बच्चों के लिए भी मनोरंजन का व्यापक प्रबंध किया गया था। प्रदेश अध्यक्ष श्री राजेश कसेरा, प्रदेश महामंत्री श्री आकाश सोम गोयनका, प्रमुख उद्योगपति एवं मारवाड़ी रत्न डा. गौरहरि सिंघानिया, श्री यदुपति सिंघानिया, गोल्डी समूह के चेयरमैन श्री सोमप्रकाश गोयनका (पूर्व प्रान्तीय अध्यक्ष), विधायक सलिल विश्नोई, प्रमुख ज्योतिषशास्त्री के. एम. दुबे. पद्मेश आदि ने मेले मे पधारकर चार चांद लगा दिये। इन्डियन आइडल में पूरे भारतवर्ष में ख्याति अर्जित कर चुकी अंकिता मिश्रा ने अपने सुमधुर गायन द्वारा समा बांध दिया। "मारवाड़ी पंचांग पत्रिका" के तृतीय पुष्प संवत् २०६८ का विमोचन सम्पादक श्री बालकृष्ण शर्मा ने किया।

अध्यक्ष सत्यनारायण सिंघानिया ने अपने स्वागत संबोधन में समाज में समरसता एवं सौहार्द बढ़ाने का संदेश दिया तथा धन वैभव के अनुचित प्रदर्शन को रोकने व समाज की कुरीतियों को संकुचित करने का आवाहन किया। महामंत्री अनिल

परसरामपुरिया ने संस्था की उत्तरोत्तर प्रगति पर प्रकाश डाला। लक्ष्मी कारसिन लि. के चेयरमैन डा. एम. पी. अग्रवाल तथा राजरतन समूह के हीरालाल खत्री ने भी उत्साहपूर्वक मेले में शिरकत की।

सुप्रसिद्ध गायिका अंकिता मिश्रा (इन्डियन आइडल फेम) को स्मृतिचिह्न प्रदान करते अध्यक्ष सत्यनारायण सिंहानिया, महामंत्री अनिल परसरामपुरिया व अन्य पदाधिकारी।

मेले में पूर्व प्रान्तीय महामंत्री मदन मोहन भरतिया, निवर्तमान अध्यक्ष सुशील तुलस्यान, पूर्व अध्यक्ष गोपाल तुलस्यान, मंत्री आलोक कानोड़िया, संयुक्त मंत्री अरुण सिंघानिया, उपाध्यक्ष महेश शर्मा, कोषाध्यक्ष महेश भगत, हनुमान कानोड़िया, भजनलाल शर्मा, बलदेव प्रसाद जाखोदिया, शिवरतन नेमानी, विश्वनाथ पारीक, कमलेश गर्ग, हरिओम तुलस्यान, सुनील केडिया, संजीव झुनझुनवाला, विनोद खेमका आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। मेला संयोजक अरुण कुमार सिंघानिया एवं गोपाल वर्मा को संस्था के भगीरथ प्रयास हेतु सभी ने साधुवाद दिया।

प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का नया कार्यालय

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन गत कई वर्षों से अपना भाड़े का कार्यालय चित्तरंजन एवेन्यू में चला रहा था। लेकिन अब सम्मेलन ने अपना ऑनरशिप का कार्यालय गिरीश पार्क के पीछे एक नवनिर्मित मकान में ६० लाख रुपयों की लागत से लिया है। उम्मीद की जाती है कि जून के अन्तिम सप्ताह तक नये कार्यालय का उद्घाटन कर दिया जायेगा। यह सूचना संस्था के महासचिव रामगोपाल बागला ने दी।

पुस्तक, पाठक एवं पुस्तकालय

राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति द्वारा भाषा एवं पुस्तकालय विभाग राजस्थान, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक २७ मार्च, २०११ को आयोजित संगोष्ठी "पुस्तक, पाठक एवं पुस्तकालय" विषय पर उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि संभागीय आयुक्त सुरजमल मीणा ने अपने उद्बोधन में कहा कि साहित्य सृजन को पुस्तकालय के माध्यम से ही आम आदमी तक पहुंचाया जा सकता है। संस्थाएं समाज को सुसंस्कृत बनाने एवं समाज के प्रति उत्तरदायित्व निर्धारण में सक्रिय भूमिका का निर्वहन करती है। मुख्य वक्ता राजस्थान प्रगतिशील लेखक संघ के अध्यक्ष वेद व्यास ने कहा कि पुस्तक ही मनुष्य का एक मात्र विश्वसनीय साथी है। पुस्तक संस्कृति के विकास का सशक्त माध्यम है, हमें नई पीढ़ी में पुस्तक पठन का संस्कार विकसित करना चाहिए। अध्यक्षता करते हुए संचार निगम के उप महाप्रबंधक पी. आर. लील ने पाठक को प्रेरित करने का उत्तरदायित्व निर्धारण आम आदमी की निष्ठा को बताया। विशिष्ट अतिथि सूचना एवं जन संपर्क विभाग के सहायक निदेशक दिनेश चन्द्र सक्सेना ने कहा कि सामाजिक सरोकारों से जुड़ लोग पुस्तकालय से जुड़ाव के लिए जन चेतना का प्रयास करें, ताकि पाठकों की अभिवृद्धि हो सके। दैनिक लोकमत के संपादक अशोक माथुर ने बताया कि शिक्षा एक लेखन का केन्द्र विन्दु वर्तमान में परिवर्तित हो रहा है तथा वंचित वर्ग के तबके में शिक्षा क्रांति का सूत्रपात हो चुका है। संस्था अध्यक्ष श्याम महर्षि ने विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शासकीय व्यवस्था के संतुलन पर निर्भरता को छोड़ते हुए स्व प्रेरणा से कार्य करना चाहिए।

संस्था सभागार में हुए द्वितीय विचार सत्र में मुख्य अतिथि शिविर के संपादक ओमप्रकाश सारस्वत ने कहा कि साहित्यिक संस्थाओं के माध्यम से ही सृजनात्मकता की ओर लोगों को उन्मुख किया जा सकता है। अध्यक्षता करते हुए रामनारायण शर्मा ने कहा कि पुस्तकों के माध्यम से ही आम आदमी का जुड़ाव बढ़ सकता है। "पुस्तकालयों में घटती पाठक संस्था : सामाजिक विचलन के परिप्रेक्ष्य में" रामपुरिया कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. मदन सैनी ने अपने आलेख के वाचन में उद्धत किया कि यद्यपि संचार क्रांति के अन्य माध्यम व इंटरनेट की वर्तमान में बहुत अधिक भूमिका हो गई है, परन्तु पाठकों को ज्ञान विज्ञान एवं अपनी जमीन से जोड़े रखने का काम देश के पुस्तकालय ही कर सकते है। "पुस्तकालय दशा एवं दिशा" विषय पर राजेन्द्र जोशी ने कहा कि पुस्तकालय जन चेतना के लिए सक्रिय माध्यम एवं जागृत स्वरूप है। "शिक्षा व संस्कृति के केन्द्र पुस्तकालय" विषय पर अपनी बात करते हुए श्रीमती विजय लक्ष्मी ने कहा कि जीवन जीने की कला, पुरुषार्थ संस्कार आचरण आदि सिखाने का एक मात्र स्थान पुस्तकालय ही है। पुस्तक एवं पुस्तकालय चेतना के खुलते द्वार विषय पर बोलते हुए मुखराम सारण ने कहा कि प्राथमिक स्तर पर बालकों की रुचि पुस्तक पढ़ने से ही उनकी चेतना जागृत होगी। चर्चा में भाग लेते हुए सत्यदीप ने कहा कि पुस्तके हमारी मित्र है, परन्तु मित्रता तभी तक अक्षुण्ण है, जब तक हम निरंतर उसके संवाद में रहें। डॉ. चेतन स्वामी व विमल शर्मा ने कहा कि पाठकों के प्रति बुद्धिजीवियों की जिम्मेदारी होती है।

रस की गंगा मुफ्त

मम्बई, वरिष्ठ सम्पादक सत्यनारायण मिश्र की देखरेख और जीवन प्रभात विमला पुस्तकालय के तत्वावधान में एक अत्यंत रोचक श्रृंखला प्रकाशित हो रही है। इसकी कई किश्तें छप चुकी हैं। जो साहित्यप्रेमी इन्हें पढ़ना चाहें, उन्हें पंद्रह रुपये के डाक-टिकट भेजने पर सुप्रसिद्ध लेखक की एक पुस्तिका के साथ रस की गंगा की प्रतियाँ मुफ्त प्राप्त हो सकती हैं।

पता : जीवन प्रभात, विमला पुस्तकालय,
ए २०९, साईं श्रद्धा, वीरा देसाई मार्ग,
मुम्बई-४०००५८।
फोन : ९७६९१०९७६०।

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2010-2012
Date of Publication - 28 April, 2011
RNI Regd. No. 2868/68

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : samajvikas@gmail.com

K/WB/LM-080
SRI MUKUND RAJ KANORIA (LM)
S/O- SANJEEV KANORIA
320, NEW ROAD, ALIPORE
KOLKATA-700027

सम्यक विचार

भ्रूण हत्या जघन्य पाप है

भ्रूण हत्या जघन्य अपराध है,
जिसका कोई प्रायश्चित नहीं।
हमारे समाज में जो भी विकृतियां है,
इन्हें दूर करने के लिये जरूरत है दृढ़ संकल्प की।
और बेटियों के प्रति सोच में बदलाव की,
बेटियां वेदना नहीं वरदान होती है।
भार नहीं जीवन का सार होती है,
इन्हें जीने दो, जघन्य अपराध को मिटने दो।
करुणा के लिये तरसती है ये बेजुबान बेचारी।
कोई तो बचाने आओ, रोती है बेबसी की मारी।
गर्दन पर चलती आरी, कोई न इनका साथी।
कन्याओं पर जुल्म होता, माँ क्यों करती हो नादानी।

*****

निर्दोष कन्याएं क्या मरती रहेगी?
दहेज रूपी दानव से क्या डरती रहेगी?
अहिंसा की भूमि पर हिंसा है कैसी?
सत्य पर असत्य की सत्ता है कैसी?
अपने बचो, प्राणी मात्र को बचाओ,
निर्दोष भ्रूण को कभी न सताओ।
पारस की विनती सुनो मेरे भाई,
अहिंसा की भूमि पर हिंसा है छाई।

परशुराम तोदी पारस
सूरत, गुजरात

गीत

– डॉ. मोहन तिवारी 'आनंद'

कुर्सी पाकर भूल गए जो धिक्कारो गद्दारों को,
लात मारकर सबक सिखा दो इन झूठे मक्कारों को।
स्वारथ के अंधे न कर दें भारत को बर्बाद।
इनका काला मुँह करके सब बोलें मुर्दाबाद।

नागफनी के बिरवा रोपें तुलसी रहे उखाड़,
कुछ मक्कार देश की इज्जत से करते खिलवाड़।
इनको सबक सिखाना होगा,
सही मार्ग दिखलाना होगा,
जो न करें राष्ट्र की इज्जत
उन सबको लतियाना होगा।
तभी सही ढंग से हम समझेंगे भारत आज़ाद,
इनका काला मुँह करके सब बोलें मुर्दाबाद।।

राष्ट्रभक्ति जन सेवा कहते करते भ्रष्टाचार,
इज्जत को नीलाम करे में जुटे हुए मक्कार।
ये मक्कार राष्ट्र के दुश्मन
सदा गलत में ये रत तन मन।
इनको अब समझाना होगा,
होश में इनको लाना होगा।
इनकी कथनी का करनी से छत्तीस का सम्वाद।
स्वारथ के अंधे न कर दें भारत को बर्बाद।
इनका काला मुँह करके सब बोलें मुर्दाबाद।

सम्पर्क – सुन्दरम बंगला
५०, महाबली नगर, कोलार रोड,
भोपाल (म. प्र.)

कविता

जिह्वा

– धर्मपाल प्रेमराजका प्रेम

इस शरीर और तन मन की, जिह्वा एक बड़ी इकाई है।
ब्रह्मा के हाथों से इसने, एक अद्‌भुत शक्ति पाई है।।

ईश्वर की श्रृष्टि का वर्णन, इसके द्वारा ही होता है।
मानव सुन्दर सतरंगी, आभाके सपने भी बोता है।।

जिह्वा रानी बड़ी सयानी, मन को बश में रखती है।
पहरा बत्तीस दुशमन का पर, चौकस हमें परस्वती है।।

कान सुने, देखें आखें,पर वर्णन नां कर पाते हैं।
अपनी बात बताने को वे जिह्वा के ढिग आते हैं।।

बिना जीभ एक दूजे को, कैसे निज बात बतायेंगे।
ज्ञान और विज्ञान किस तरह, औरों तक पहुचायेंगे।।

कण-कण में ईश्वर का दर्शन, जिह्वा हमें कराती है।
वेद-पूराण और सद्‌ग्रन्थों का सार हमें बतलाती है।।

बल, बुद्धि, विद्या, पौरुष का, तमगा हमें दिलाती है।
धूल चटाती क्षणभर में या, उच्च शिखर पहुँचाती है।

स्वाद चखे, खट्‌टा-मीठा या, कडुवा हमें बताती है।
खाने को चटपटी चीज़ यह, अपनी लार बहाती है।।

जिह्वा पर लगी चोट फैरन, क्षण दो क्षण में मिट जाती है।
जिह्वा से लगी चोट हरदम, जीवन भर उसे रुलाती है।।

मीठी वाणी बोलोगे तो, सर आँखो पर छाओगे।
विष का तीर चलाओगे तो, सर पर जूते खाओगे।।

जिह्वा से निकली वाणी में, शहद प्रेम का घोलो तुम।
अपनी आशा से ज्यादा ही, सम्मान उसी क्षण ले लो तुम।।

माता-पिता का अपमान ईश्वर का अपमान : पं. मालीराम शास्त्री

राजारहाट में असहाय वृद्धों व परित्यक्त बच्चों के लिये हुआ ममता का मंदिर का उद्घाटन

कोलकाता। जन-जन के चहेते भागवत मर्मज्ञ पं. मालीराम शास्त्री ने कहा है कि माता-पिता भगवान के समान हैं। इसलिए उनका अपमान ईश्वर के अपमान के बराबर है। ऐसा करने वालों को काफी कष्ट भोगना पड़ता है और पड़ेगा इसमें कोई भी संशय नहीं है। पं. शास्त्री राजारहाट के पाथेरघाटा में ३२ कट्टा भूमि पर भागवत जन-कल्यान ट्रस्ट की ओर से असहाय वृद्धों और परित्यक्त बच्चों के लिए निर्मित 'ममता का मंदिर' के उद्घाटन समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि इस ममता का मंदिर में अपनों के सताये वृद्ध एवं परित्यक्त बच्चों को स्थान मिलेगा। इस मंदिर में असहाय वृद्ध और परित्यक्त बच्चे एक दूसरे के प्रति ममता का माध्यम बनेंगे। जहां एक ओर अपने ही बच्चों द्वारा उपेक्षित माता-पिता को परित्यक्त बच्चों का प्यार मिलेगा वहीं परित्यक्त बच्चों को माता-पिता का वात्सल्य प्राप्त होगा। पं. शास्त्री ने समाज में बच्चों द्वारा अपने माता-पिता की की जा रही उपेक्षा पर गहरी चिंता जताते हुए कहा कि इसका एक कारण यह भी है कि आज के आधुनिक युग में माता-पिता को अपने बच्चों के लिए समय ही नहीं है। बच्चे

ममता का मंदिर, उद्घाटन करते हुए पं. मालीराम शास्त्री, समाजसेवी नन्दलाल रुंगटा, अ.भा.मा. सम्मेलन के उपाध्यक्ष रामअवतार पोद्दार व अन्य।

या तो आयाओं की छत्र-छाया में पल बढ़ रहे हैं या फिर बोर्डिंग स्कूलों में पढ़ रहे हैं। ऐसी स्थिति में जब बच्चों को अपने माता-पिता का प्यार ही नहीं मिला तो फिर वे बच्चे अपने माता-पिता के प्रति कैसे समर्पित भाव रखेंगे। उन्होंने समाज में पाश्चात्य सभ्यता संस्कृति के तेजी से बढ़ रहे दुष्प्रभाव पर भी चिंता जताई और कहा कि अनैतिक सम्बंधों के कारण ही समाज में परित्यक्त बच्चों की संख्या बढ़ रही है। ऐसी स्थिति में हम सब को मिलकर इस परिस्थिति पर नियंत्रण हेतु कार्य करना होगा।

आज के आधुनिक युग में माता-पिता को अपने बच्चों के लिए समय ही नहीं है। बच्चे या तो आयाओं की छत्र-छाया में पल बढ़ रहे हैं या फिर बोर्डिंग स्कूलों में पढ़ रहे हैं। ऐसी स्थिति में जब बच्चों को अपने माता-पिता का प्यार ही नहीं मिला तो फिर वे बच्चे अपने माता-पिता के प्रति कैसे समर्पित भाव रखेंगे।

उद्घाटन समारोह का प्रारम्भ श्री रविन्द्र केजरीवाल 'रवि' द्वारा रचित मार्मिक नृत्य नाटिका 'ममता का मंदिर' के मंचन के साथ हुआ जिसमें युवा गायक रवि शर्मा सूरज ने अपने सुरीले कंठ से प्रस्तुत गीतों एवं भाष्कर ग्रुप के कलाकारों ने अभिनय के माध्यम से समाज के असहाय वृद्धों व परित्यक्त बच्चों की दशा एवं 'ममता का मंदिर' की आवश्यकता का जीवंत चित्रण प्रस्तुत किया। तत्पश्चात इस मंदिर का उद्घाटन विशिष्ट उद्योगपति व समाजसेवी श्री नन्दलाल रुंगटा ने दीप प्रज्ज्वलन कर किया और कहा कि पं. शास्त्री जी का यह प्रयास वंदनीय है और इस कार्य में हम सभी को आगे आना चाहिए। प्रधान अतिथि श्री चिरंजीलाल अग्रवाल, मुख्य वक्ता श्री सीताराम शर्मा, विशिष्ट वक्ता श्री सांवरमल भीमसरिया, विशिष्ट अतिथि डॉ. जुगलकिशोर सराफ, श्री साधुराम बंसल, श्री मोहनलाल तुलस्यान, श्री गणेश नारायण सुल्तानिया व श्री भानीराम सुरेका ने भी अपने वक्तव्य में इस कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की और समाज में ऐसी घटनाओं को बढ़ने से रोकने के लिए आवश्यक कदम उठाने का आहवान किया। समारोह के प्रारम्भ में कोलकाता के पूर्व शेरिफ डॉ. एस. के. शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया।

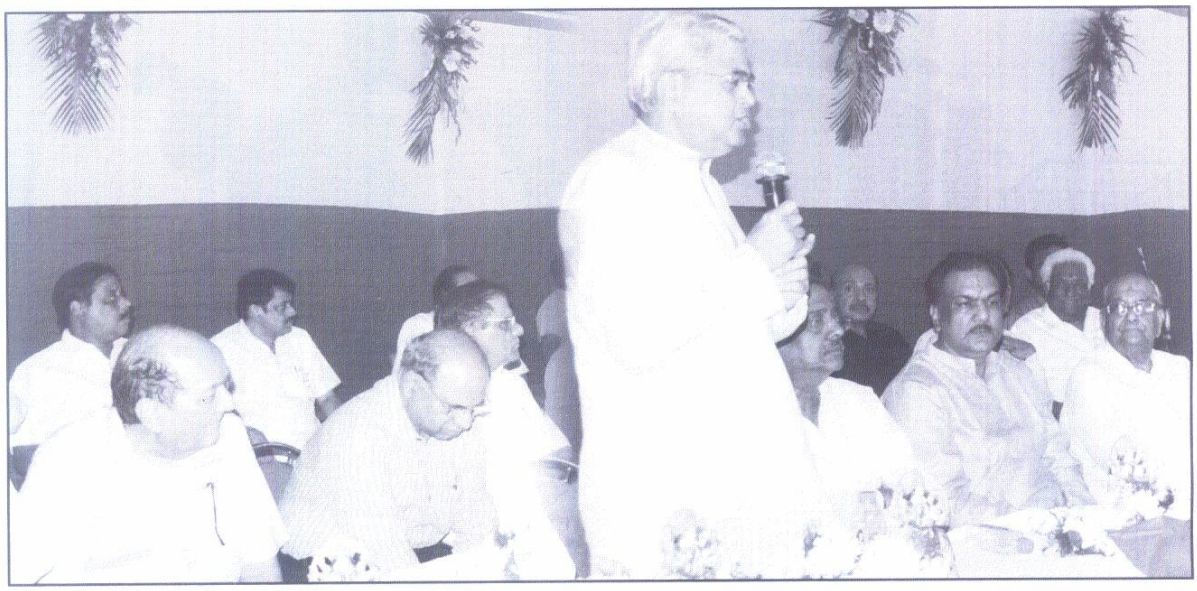

मंदिर के उद्घाटन अवसर पर मुख्य वक्ता श्री सीताराम शर्मा (वक्तव्य रखते हुए)

मंदिर के मुख्य संचालक श्री बिजय कुमार अग्रवाल ने कहा कि 'ममता का मंदिर' में राधाकृष्ण, हनुमान, दुर्गा, शिव परिवार मंदिर, प्रार्थना कक्ष, ४० कमरे (स्नानागार सहित), जलपान, भोजन, सत्संग व मनोरंजन की सम्पूर्ण व्यवस्था की गई है। जरूरत है इसके कुशल संचालन में समाज के लोग तन-मन-धन से आगे आयें। धन्यवाद ज्ञापन श्री रामअवतार पोद्दार एवं संचालन श्री सुरेश कुमार भुवालका ने किया। इस अवसर पर बतौर सम्माननीय अतिथि श्री विजय गुजरवासिया, श्री जयदेव रावलवासिया, श्री संतोष सराफ, श्री रतनलाल अग्रवाल, श्री रमेश अग्रवाल, श्री विनोद टिबड़ेवाल, श्री महेन्द्र सांवलका, श्री सम्पतमत वच्छावत, श्री रमेश कुमार शर्मा, श्री विनोद केडिया, श्री संजय केजरीवाल, श्री तिलोक चंद डागा, श्री सत्यनारायण खेतान, श्री गोविन्दप्रसाद शर्मा, श्री रतनलाल गोयल, श्री चन्द्रकांत सराफ सहित अनेक गणमान्य लोग मंचासीन थे। इस समारोह को सफल बनाने में श्री जगदीश प्रसाद अग्रवाल, श्री सुशील गोयनका, श्री संजय गुप्ता, श्री उत्तम अग्रवाल, श्री विष्णु पोद्दार, श्री सजन तायल, श्री प्रदीप केडिया, श्री मनोज गोयल, श्री दीपक अग्रवाल, श्री संदीप अग्रवाल, श्री पंकज टिबड़ेवाल, श्री मनमोहन अग्रवाल, श्री गोविन्द टिबड़ेवाल, श्री कमलेश शर्मा, श्री बिनोद सोनी, श्री प्रदीप अग्रवाल, श्री मधुसूदन बूबना, श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, श्री संजय अग्रवाल, श्री संजय सुरेका, श्री रमेश बंसल, श्री सुरेश अग्रवाल आदि अनेकों कार्यकर्त्ता सक्रिय थे।

भोग एवं भ्रष्टाचार ने देश को विक्षिप्त किया है

– डॉ. मुरली मनोहर जोशी, पूर्व केन्द्रीय मंत्री

कोलकाता। 'अर्थ आज जीवन के केंद्र में आ गया है अतः भोग एवं भ्रष्टाचार ने जन-जीवन को विक्षिप्त बना दिया है। जो तर्क एवं अर्थ के साथ देश से जुड़ते हैं उन पर विकृति हावी हो जाती है। हृदय प्रमुख हो तो देश के प्रति आत्मीयता आती है जो अध्यात्म से प्राप्त होती है। अध्यात्म में जो शक्ति है वह समाजवाद, साम्यवाद एवं पूंजीवाद में नहीं है।' – ये विचार हैं पूर्व केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी के, जो श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के तत्वावधान में आयोजित डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान के अवसर पर स्थानीय महाजाति सदन प्रेक्षागृह में प्रधान अतिथि के रूप में बोल रहे थे।

डॉ. जोशी ने पीड़ा के साथ कहा कि देश में आज भोग, भ्रष्टाचार एवं अनाचार चरम पर है। उसे दूर करने के लिए प्राचीन भारत में राज्य के नियंत्रण के लिए ऋषियों की जो परंपरा रही है उसे पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि भारतीय चिंतन पद्धति से ही विश्व संचालित होगा। आवश्यकता इस बात की है कि हम स्वयं समझें कि यह भारत है, इंडिया नहीं। डॉ. जोशी ने कहा कि जनतंत्र का मूल-मंत्र विविधता में एकता, विश्वबंधुत्व तथा सहिष्णुता है।

प्रधान वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहनरावजी भागवत ने कहा कि भारत को भारत की प्रज्ञा के आधार पर खड़े होना है। हमारे अपने संसाधन, अपनी परंपरा एवं विकास की नीतियां हमारे सामने होनी चाहिए। श्री भागवत ने कहा कि विचार-भिन्नता हो सकती है लेकन प्रामाणिक एवं निस्वार्थ बुद्धि के महापुरुषों के विचारों को स्वीकार करके ही देश प्रगति कर सकता है।

कार्यक्रम के अध्यक्ष कर्नाटक के पूर्व राज्यपाल श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी ने कहा कि भ्रष्टाचार अथवा किसी भी अनाचार के लिए अनैतिकता एवं मर्यादाहीनता जिम्मेदार है। उन्होंने डॉ. मिश्र की दीर्घ साहित्य साधना की प्रशंसा करते हुए कहा कि उनक संपूर्ण लेखन 'भोग-विक्षिप्त समय में आश्वस्तिमूलक विकल्प की तलाश' है। श्री चतुर्वेदी ने कहा कि सद्भावना ही हमारे विकास और समृद्धि की जड़ है।

पुस्तकालय के पूर्व अध्यक्ष श्री जुगलकिशोर जैथलिया ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया तथा डॉ. मिश्र का साहित्यिक परिचय कराया श्री विमल लाठ ने। समारोह का संचालन पुस्तकालय के अध्यक्ष डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन किया उपाध्यक्ष श्री महावीर बजाज ने। मंच पर सर्वश्री रणेन्द्रलाल बन्दोपाध्याय, राहुल सिन्हा एवं लक्ष्मीनारायण भाला भी उपस्थित थे।

परोपकारी मारवाड़ी समाज.....

– परमजीत नायडू

१५२ वी महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता - ७०० ००७ मैं एक गैर मारवाड़ी के नजरिये में अपने निजी उद्‌गार व्यक्त कर रहा हूं। देश-विदेश में भ्रमण करके मैने पाया कि भारत को सही मायनों में कोई समाज परोपकार की दृष्टि से सही ढंग से प्रतिनिधित्व कर सकता है तो वह है मारवाड़ी समाज। उसके बाद ही तुरन्त गुजराती समाज आता है। अंग्रेजी में एक शब्द कभी कभार घोड़ों के रेस में उपयोग किया जाता है। उस शब्द का नाम है 'फोटो फिनीश'। मेरे अनुभव अनुसार गुजराती समाज भी परोपकार के मामले में पीछे नहीं है। वह समाज भी लाजबाब समाज है, पर मेरे आकलन और मेरे दोनों समाजों के साथ घनिष्ठ सम्बन्धों के कारण हर लिहाज से मेरी निचोड़ अनुसार मारवाड़ी समाज का पलड़ा भारी हो जाता है। चूंकि मैंने एक विश्व विख्यात मल्टीनेशनल अमेरिकन कम्पनी 'यूनियन कारबाइड' में करीब ३० साल काम किया था उस वास्ते भारत के हर छोटे-बड़े शहरों, कस्बों, गांवों और राज्यों में, निकट से सब समाजों से घुलने-मिलने और तौर-तरीकों को देखने, समझने और मंथन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गरीबों की मदद हेतु ही जगह-जगह मारवाड़ी समाज ने निज का ट्रस्ट बनाया है। इस लिहाज से मैं अपने आपको एक भाग्यशाली इंसान समझता हूं। अतिथि देवो भव! का आभास इन दोनों समाजों ने मुझे कराया और यह भी मारवाड़ी व्यापारी समाज ने सिखाया (NO RISK NO GAIN) इसीलिये यह समाज उन्नतशील है और सदा रहेगा।

भाग्यवश, मेरा जन्म ठीक आजादी के बाद बड़ा बाजार (कलकत्ता) का ही है। बड़ा बाजार में सन् १८३० से १९८० तक मारवाड़ी और गुजराती समाज एकजूट होकर अगल-बगल साथ-साथ रहते थे। बाद में परिवारों के बढ़ने से बड़ा बाजार की यह आबादी भवानीपुर, अलीपुर, लेकटाउन, बांगुड़, साल्टलेक, बालीगंज, बेहाला, हेस्टिंग्स, हावड़ा और टॉलीगंज की तरफ फैलता चला गया। बड़ा बाजार में ही, गुरुद्वारा में आज से ४०० साल पहले सिखों के प्रमुख गुरूनानक देव जी ने आसाम से वापसी पर कुछ दिन ठहर कर विश्राम किया था। बड़ा बाजार से सिर्फ दो फर्लांग की दूरी पर विश्व विख्यात कवि और 'जन गण मन अधिनायक जय हे' के जन्मदाता कविगुरु रवीन्द्र नाथ टैगोर ने जोड़ासांकू में जन्म लिया था। ठीक उससे एक मील की दूरी पर स्वामी विवेकानन्दजी ने जन्म लिया था। इसलिये बड़ाबाजार ऐतिहासिक है। बर्तन में पकनेवाला चावल, पक चुका है कि नहीं, देखने के लिये गृहणी दो-तीन दानों को मसल कर समझ लेती हैं, ठीक उसी तरह पूरे विश्व में फैले हुए मारवाड़ी समाज को परखना है तो कोई भी पारखी नजर सिर्फ बड़ाबाजार (कलकत्ता) सम्पूर्ण विश्व के मारवाड़ियों का मेरुदण्ड (SPINAL CORD) है। इसमें दो मत हो ही नहीं सकता। यों तो राजस्थान मारवाड़ी समाज की मातृभूमि रहा, पर बड़ाबाजार (कलकत्ता) का अपना एक अलग ही महत्व है। बिड़लाजी, बांगड़जी और जालानजी जैसे धनाढ्यों की कर्मभूमि रहा है बड़ा बाजार। मुक्तिराम बाबू स्ट्रीट का राम मन्दिर जालान परिवार की ही देन है।

श्री विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल इस वर्ष शताब्दी वर्ष मना रहा है। जयपुर (राजस्थान) के पास पुष्करजी है। पूरे विश्व में ब्रह्माजी का एक ही मंदिर है, सिर्फ पुष्कर में। सम्पूर्ण भारत हर वक्त मुख्य रूप से 'ब्रह्मा-विष्णु-महेश' त्रिमूर्ति का ही नाम लेता है अपनी पूजा-अर्चना-प्रार्थनाओं में। मॉ गायत्री उन्हीं की पुत्री थीं। भारत की कुल जनसंख्या १२० करोड़ है। इस १२० करोड़ जनसंख्या में ३% (तीन प्रतिशत) ब्राह्मण समाज है। गायत्री मंत्र ब्राह्मण समाज की बपौती थी। स्वामी विवेकानन्द जी से गायत्री मंत्र के बारे में जब पूछा गया कि गायत्री मंत्र के बारे में कुछ बताइये तो स्वामी जी ने दो टूक शब्दों में उत्तर दिया था कि – 'ब्राह्मण समाज गायत्री मंत्र जपने की इजाजत नहीं देता।' आज गायत्री मंत्र पूरे जनमानस तक पहुंचा है तो उसका पूरा श्रेय मारवाड़ी समाज को ही जाना चाहिये। स्वामी विवेकानन्द जी के ऐतिहासिक हस्ती होने में मारवाड़ी समाज का हाथ था। वैसे भी मारवाड़ी समाज पर ब्रह्माजी और मां गायत्री का वरदहस्त हो तो इस समाज का कोई भी कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता। युक्ति, शक्ति और भक्ति एक साधारण से साधारण मारवाड़ी की पहचान है। *(क्रमशः)*

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

Business Economics Subscription Form

Yes! I would like to subscribe **Business Economics**

Subscribers may send choice of books valued equal to subscription

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	US $	UK £	Gift Option
☐	3 Years	72	1080/-	1080/-	1080/-	144	72	☐ Tie + Scarf OR ☐ Bag + Scarf ☐ Books ☐ Any One Book out of above (For International)
☐	1 Year	24	360/-	360/-	360/-	48	24	☐ Scarf OR ☐ Bag OR ☐ Books ☐ Any One Book out of above (For International)
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 50)	120/-	NIL	290/-	-	-	☐ Exclusively for Students
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 50)	120/-	NIL	290/-	-	-	☐ EXCLUSIVELY FOR SENIOR CITIZENS

Name : Mr./Ms. _____

Address : _____

City/District : _____

State : _____ Country : _____ Pin Code : _____

E-mail : _____ Mobile : _____ Landline : _____ (STD CODE)

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. _____ dated : _____ for Rs. _____ drawn on : _____

In favour of CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED

* For books see reverse page

Signature : _____ date : _____

Mail this subscription form along with your Cheque / DD to : Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact : Kolkata : Shaonli Majumder : 033 2223-0368 • **Mumbai** : Rajendra Singh : 90290 84951
New Delhi : Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima** : Povotso Lohe : 94360 05889

समाज विकास

मूल्य : ₹.१० प्रति, वार्षिक ₹.१००

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• मई २०११ • वर्ष ६२ • अंक ५

बंगाल की प्रथम महिला मुख्यमंत्री

ममता बनर्जी

बड़ी जीत : बड़ी उम्मीद

शपथ ग्रहण

- मां, माटी, मानुष नारे के साथ रचा नया इतिहास : चहुंमुखी विकास की आशा
- विशेष लेख : ममता, मारवाड़ी एवं मार्क्सवादी - सीताराम शर्मा